समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

• जून-जुलाई २०१५ • वर्ष ६६ • अंक ०६-०७

मूल्य : ₹ १० प्रति, वार्षिक ₹ १००

२८ जून २०१५ को उत्तरी लखीमपुर में आयोजित पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के चतुर्दश प्रांतीय अधिवेशन में सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार, राष्ट्रीय संगठन मंत्री श्री संजय हरलालका, प्रांतीय अध्यक्ष श्री मधुसूदन सीकरिया, निवर्तमान प्रांतीय अध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाला एवं अन्य।

इस अंक में :

- सम्पादकीय : टूटते वैवाहिक रिश्ते, दोषी कौन?
- अध्यक्षीय : संस्कार से ही सद्गति!
- मारवाड़ी और मानवता जुड़े हुए : सांसद बी.डी. राम
- सम्मेलन की अखिल भारतीय समिति की बैठक
- असम के निकाय चुनाव : समाज के सफल प्रत्याशी
- प्रेमचन्द : सामाजिक चेतना के पुरोधा साहित्यकार

प्रेमचन्द जयन्ती : ३१ जुलाई २०१५

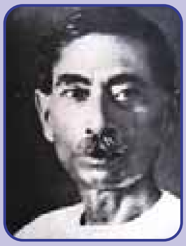

- कर्त्तव्य ही ऐसा आदर्श है जो कभी धोखा नहीं दे सकता।
- आत्म सम्मान की रक्षा हमारा सबसे पहला धर्म है।

१४ जून २०१५ को राँची में आयोजित सम्मेलन की अखिल भारतीय समिति की बैठक को सम्बोधित करते झारखण्ड विधानसभा अध्यक्ष श्री दिनेश उरांव ; परिलक्षित हैं (बायें से दायें) झारखण्ड सम्मेलन के अध्यक्ष श्री राजकुमार केडिया, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विनय सरावगी, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूँगटा, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री प्रह्लाद राय अगरवाला, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, राष्ट्रीय महामंत्री श्री शिव कुमार लोहिया एवं राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री सुरेन्द्र लाठ।

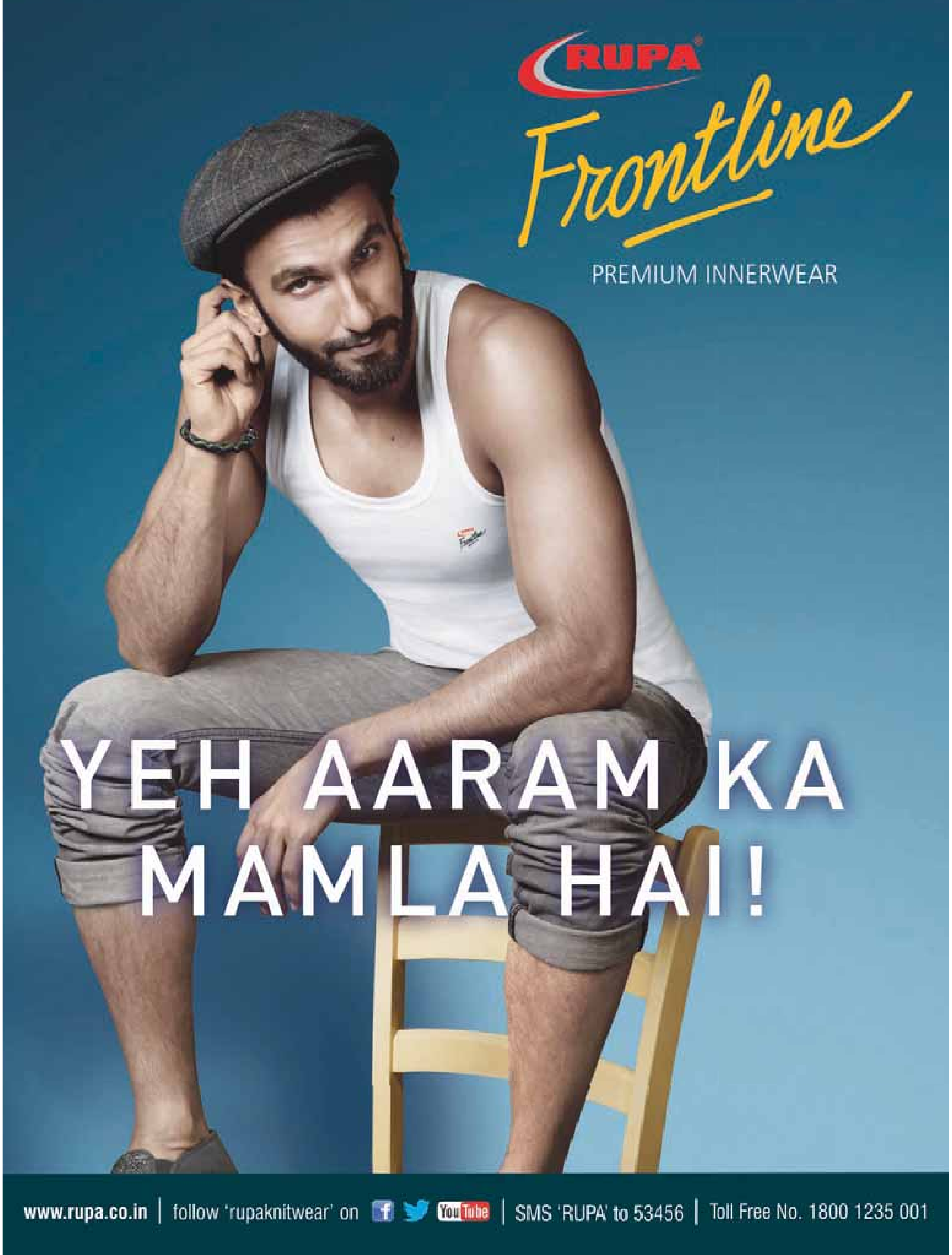
RUPA
Frontline
PREMIUM INNERWEAR
YEH AARAM KA MAMLA HAI!
www.rupa.co.in | follow 'rupaknitwear' on YouTube | SMS 'RUPA' to 53456 | Toll Free No. 1800 1235 001

समाज विकास

◆ जून-जुलाई २०१५ ◆ वर्ष ६६ ◆ अंक ०६-०७ ◆ एक प्रति - ₹ १० ◆ वार्षिक - ₹ १००

अनुक्रमणिका

शीर्षक			पृष्ठ संख्या
चिट्ठी आयी है			४
सम्पादकीय : टूटते वैवाहिक रिश्ते, दोषी कौन?	–	*सीताराम शर्मा*	५-६
अध्यक्षीय : संस्कार से ही सद्‌गति!	–	*रामअवतार पोद्दार*	७
केन्द्रीय / प्रान्तीय समाचार			९-१७
लेख : प्रेमचन्द : सामाजिक चेतना के पुरोधा साहित्यकार	–	*शिव कुमार लोहिया*	१८
लेख : माँ गायत्री है वेदों की जननी	–	*ललित गर्ग*	१९-२०
लेख : आखिर ये आडम्बर क्यों?	–	*शिव कुमार लोहिया*	२१
लेख : कोशिश होती रहे बेकार...	–	*संजय कुमार हरलालका*	२३-२४
लेख : मारवाड़ी समाज – नैतिक अवमूल्यन	–	*आर. एस. अग्रवाल*	२४
कविता : तुम्हें! निर्माण करना है	–	*प्रो.डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत*	२७
कविता : नाक	–	*ताऊ शेखावाटी*	२९

स्वत्वावधिकारी

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन ◆ १५२बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता - ७००००७
फोन : ०३३-२२६८ ०३१९ ◆ email: aimf1935@gmail.com
के लिये श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा
सी.डी.सी. प्रिंटर्स प्रा. लि., ४५, राधानाथ चौधरी रोड, कोलकाता - ७०००१५ से मुद्रित
प्रधान संपादक : सीताराम शर्मा
प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

चिट्ठी आयी है

समाज विकास का क्रम टूटे नहीं

आपका ध्यान आपकी समाज-विकास पत्रिका के कारणों पर आकर्षित करना चाहता हूँ। कई महीनों के गैप में मार्च की दो पत्रिका एक सप्ताह के अंतराल में प्राप्त हुई। आश्चर्य भी हुआ साथ में आपकी दिकतें भी ध्यान में आईं। पूरे देश में इस पत्रिका का आदान-प्रदान होता है। हमारे मनस्वी विचारकों के भाव, विचार राय एवं समाज को मार्गदर्शन का रास्ता सदैब प्राप्त होता है। समाज के हर तबके के लोग इससे अनुप्रेरित होकर अपने आप में अच्छे विचारों को ग्रहण करते रहते हैं। यह एक अनुकरणीय परंपरा है। कृपया समय-समय पर पत्रिका प्राप्त हो, क्रम टूटे नहीं इस पर आपको ध्यान देना अति आवश्यक है। संपादक श्री शर्माजी द्वारा आने वाले मतदान की प्रक्रिया पर वड़ा ही अच्छा सुझाव दिया गया है। साथ ही अध्यक्ष महोदय द्वारा समाज के हर तबके के व्यक्तियों को सम्मेलन में सम्मिलित होकर इसके संगठन को और दृढ़ एवं मजबूत वनायें, ऐसा विचार दिया गया है। हम "समाज विकास" पत्रिका की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं कि समय-समय पर देश की सभी गतिविधियों की जानकारी इससे प्राप्त हो रही है।

– **सत्यनारायण तुलस्यान**, मुजफ्फरपुर (बिहार)

जैसा आप जानते हैं, जनवरी २०१५ से समाज विकास देश के सभी सदस्यों को भेजी जा रही है। बीच में डाक-तार विभाग के साथ कुछ अड़चनें आईं थीं, जिन्हें सुलझा लिया गया है। यदि समाज विकास किसी भी माह नहीं मिलती है तो केन्द्रीय कार्यालय (दूरभाषः ०३३-२२६८०३१९) को अवश्य सूचित करें।

– सम्पादक

नेपाली महावाणिज्य दूतावास, कोलकाता
CONSULATE GENERAL OF NEPAL
1, National Library Avenue, Alipore, Kolkata-700 027
Tel : 0091-33-2456-1154 / 1224 / 1085 / 1103
Fax : 0091-33-2456-1410

CONSULATE GENERAL OF NEPAL
Kolkata

11th June 2015

Letter of Appreciation

*This letter of appreciation is issued to "**All India Marwari Federation**" Kolkata who compassionately contributed in bringing relief to the victims of earthquake that hit and devastated Nepal on 25th April 2015 and its subsequent aftershocks by providing cash/materials from Kolkata.*

The Consulate General of Nepal is touched by the solidarity shown with our people in this time of grief and grateful to the benevolence extended for the cause of relief.

Thanking you very much.

(Sita Basnet)
Consul

प्रकाशन ज्ञानवर्धक

आपका मई २०१५ का समाज विकास अंक मिला इसके लिए बहुत धन्यवाद! इस तरह के प्रकाशन से समाज से संबंधित बहुत सी जानकारी मिलती है। यह एक अच्छा प्रयास है।

— **शिव कुमार शाह**, भागलपुर (बिहार)

सूझ-बूझ वाला सम्पादकीय

आपका सम्पादकीय पढ़ा। बड़ा सूझ-बूझ वाला सम्पादकीय है। आम धारणा भी व्यक्त कर दी और खतरों से भी सावधान कर दिया। दूसरा साल कठिनाइयों से भरा है। इसमें मोदी की असलियत की परीक्षा है। यह साल दिशासूचक है। देश किधर जायेगा – आपकी सोच के अनुसार या आडवाणी जी की आशंका के अनुसार। देश तरक्की करे यह तो हम सबकी राय है। आपकी राय से सहमत हैं।

– **नागराज शर्मा**, पिलानी (राज.)

सम्पादकीय

टूटते वैवाहिक रिश्ते, दोषी कौन?

क्या मोबाइल और इंटरनेट भी कारण बन रहे हैं?

– सीताराम शर्मा

वर्ष २०१३-१४ में दहेज प्रताड़ना के ४ लाख २८ हजार एफ.आई.आर. देश भर में दर्ज हुए हैं। जबकि लगभग ४ लाख १२ हजार हरेक वर्ष दोषमुक्त हो जाते हैं। एक रपट के अनुसार जबलपुर में पारिवारिक विवाह की शिकायतों के

बाद गिरफ्तारी और अन्य उत्पीड़क कार्रवाई के भय से करीब सात हजार पति अंडरग्राउंड हो गये। इनमें से कुछ सन्यासी बन गये हैं, कुछ ने तो आत्महत्या कर ली है। यह तो दहेज की बात है, लेकिन सच्चाई यह है कि वैवाहिक रिश्तों में दरार बढ़ रही है। नशा, नाजायज संबंध, संदिग्ध व्यवहार, इगो, आर्थिक तंगी आदि दहेज उत्पीड़न के कारण प्रतीत हो रहे हैं। बेमेल रिश्ते – मसलन आर्थिक, शैक्षणिक या आयु का अंतर और आधुनिकता के साथ-साथ जीवनसाथी में परंपरागत गुण ढूँढने की चाहत भी दरकते रिश्तों की वजह बन रही है। साथ-साथ रिश्ते टूटने के पीछे का सबसे बड़ा कारण आजकल मोबाइल और इंटरनेट को बताया जा रहा है। वास्तव में सबसे बड़ा कारण नशे का इस्तेमाल है।

प्रेम-विवाहों की स्थिति भी कोई अच्छी नहीं है। **वर्षों तक साथ-साथ पढ़ने और मोबाइल पर साथ जीने-मरने की कसमें खाने और दिन के २४ घंटों में से १४ घंटे बातें एवं चैट करने के बाद जब शादी हो गई तो एक-दो वर्षों और कभी-कभी तो महीनों में विवाह टूटने की नौबत आ रही है।** कारण, विवाह-पूर्व जो प्रेमी था, वह अब पति की भूमिका में था। प्रत्येक फरमाईश पूरी करवाने वाली प्रेमिका अब पत्नी की भूमिका में थी किन्तु पत्नी और बहू की भूमिका निभाना मुश्किल हो रहा था।

एक महिला काउंसलर रीता तूली के अनुसार, "मोबाइल फोन परिवार तोड़ने का सबसे बड़ा हथियार है। एटमबम तो एक बार में व्यक्ति को मार देता है, पर यह तिल-तिल कर मारता है। **विभिन्न परामर्श-केन्द्रों में आनेवाली शत-प्रतिशत शिकायतों के पीछे किसी न किसी रूप में मोबाइल का रोल होता है।** आजकल की अधिकतर महिलाओं में धैर्य नहीं है।"

पत्नी में आधुनिकता के साथ-साथ घर-गृहस्थी की लक्ष्मी की चाहत भी एक टकराव पेश करती है। पति चाहता है कि उसकी पत्नी अति सुन्दर हो, सलवार-सूट ही नहीं जींस-टाप भी पहने, क्लब में साथ-साथ डांस करे। ऐसे लोग पत्नी के साथ 'एक्सपोजर' फोटो उतार कर फेसबुक में

> ***तलाक अब एक साधारण-सी घटना मानी जा रही है। पति-पत्नी दोनों इसे सहजता से स्वीकार कर रहे हैं। और तो और, माँ-बाप भी आजकल इसे खानदान के लिये कोई अपमानजनक बात नहीं मानते। "आपस में नहीं बन रही थी, अलग हो गये" – होता है। कहीं लड़की के माँ-बाप बेटी से कहते हैं कि खुश नहीं हो तो छोड़ दो, लड़कों की कमी नहीं है। वहीं जहाँ लड़की से पति के साथ माँ-बाप भी खुश नहीं है, वहाँ वे लड़के को तलाक के लिए प्रोत्साहित करने में नहीं हिचकिचाते। तलाक अब एक 'दाग' नहीं रह गया है – ऐसा प्रतीत होता है।***

डालकर गर्वित महसूस करते हैं। पत्नी भी बोल्ड फोटो फेसबुक में डालती है। अन्तर्द्वन्द यहाँ है कि पति चाहता है पत्नी अंग्रेजी फर्राटे से बोले, आधुनिक हो, लेकिन रहन-सहन में परंपरागत भी हो। उसकी शिकायत होती है कि लड़की न माँग भरती है, न चूड़ी पहनती है, माता-पिता का ख्याल नहीं रखती, चौका-रसोई नहीं सम्भालती, घर के काम को अपनी तौहीन समझती है। दूसरी तरफ पत्नी सुन्दर, शिक्षित, कमाऊ, आधुनिक पति के साथ-साथ एक ऐसा जीवनसाथी खोजती है जो पैसा तो खूब कमाये और उस पर खर्च करे लेकिन सारा समय पत्नी को दे, उसकी सभी फरमाईशें पूरी करे, माता-पिता से ज्यादा उसका ख्याल रखे। एडजस्टमेंट स्वीकार नहीं है। "मेंटली मैच" नहीं हो रही है, यह आम शिकायत बन रही है। तलाक अब एक साधारण-सी घटना मानी जा रही है। पति-पत्नी दोनों इसे सहजता से स्वीकार कर रहे हैं। और तो और, माँ-बाप भी आजकल इसे खानदान के लिये कोई अपमानजनक बात नहीं मानते। "आपस में नहीं बन रही थी, अलग हो गये" — होता है। कहीं लड़की के माँ-बाप बेटी से कहते हैं कि खुश नहीं हो तो छोड़ दो, लड़कों की कमी नहीं है। वहीं जहाँ लड़की से पति के साथ माँ-बाप भी खुश नहीं है, वहाँ वे लड़के को तलाक के लिए प्रोत्साहित करने में नहीं हिचकिचाते। तलाक अब एक 'दाग' नहीं रह गया है — ऐसा प्रतीत होता है।

शादी-विवाहों के संबंधों में पारिवारिक छानबीन एवं खानदान की जाँच की बजाय धन-वैभव तथा खूबसूरती का अधिक महत्व हो रहा है। फेसबुक और अखबारों के स्तम्भों के माध्यम से वैवाहिक संबंध किए जा रहे हैं। **ऊपरी दिखावा, बड़ी गाड़ियाँ, चटर-पटर अंग्रेजी, फैशन, सूट-बूट और कभी-कभी विदेशी पढ़ाई के प्रभाव में परिवार अपनी बहू या अपना दामाद, बिना पता किए रिश्ता करते हैं। उसका खामियाजा माँ-बाप को ही नहीं, पति-पत्नी को भी भुगतना पड़ता है।**

चाहे बेटी हो या बहू हो, पति-पत्नी हों, माँ-बाप हों अथवा दोस्त-सहेली हों — एक अजब दौर है कि फेसबुक पर अपनी आजकल की भाषा में 'सेक्सी तस्वीरें' गैरों को दिखाने के लिये पोस्ट करना जिन्हें वे संभवतः अपने बेडरूम में ही देख सकते हैं, घर के ड्राईंगरूम में नहीं रख सकते। एक होड़ लगी है कि किसकी कौन-सी तस्वीर पर कितने 'लाईक्स' आये हैं और क्या-क्या 'कमेन्टस'। इन 'लाइक्स और कमेन्टस' ने कितनों का घर बिगाड़ा है यह तो सर्वे की बात है। ★ ★ ★

प्रादेशिक/प्रांतीय अध्यक्षों/महामंत्रियों एवं वार्षिक सदस्यों के सादर ध्यानार्थ

जैसा आप जानते हैं, जनवरी २०१५ से 'समाज विकास' की प्रति सम्मेलन के प्रत्येक सदस्य को भेजी जा रही है। इससे 'समाज विकास' के उपर आनेवाला खर्च कई गुना बढ़ गया है। समाज विकास के संचालन हेतु कोई पृथक कोष नहीं है। यह सीमित विज्ञापनों एवं वार्षिक सदस्यों द्वारा दी जा रही नाममात्र की राशि पर ही निर्भर है।

वार्षिक सदस्यों की सूची के निरीक्षण में पाया गया कि बड़ी संख्या में सदस्यों ने वित्तीय वर्ष २०१५-१६ के लिए अपना शुल्क जमा नहीं कराया है। खेदसहित सूचित करना पड़ रहा है कि जिन सदस्यों का वित्तीय वर्ष २०१५-१६ का शुल्क ३१ जुलाई २०१५ तक प्राप्त नहीं होता, उन्हें जुलाई २०१५ के बाद से 'समाज विकास' की प्रति भेजना संभव नहीं हो पाएगा।

सभी प्रादेशिक/प्रांतीय इकाइयों से इस विषय में शीघ्र कार्रवाई का सादर अनुरोध है।

अध्यक्षीय

संस्कार से ही सद्गति!

– रामअवतार पोद्दार

मातृशक्ति, युवाशक्ति, भाइयों,

राम-राम, राधे-राधे!

जैसा आप जानते हैं, अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन सदैव से नारी-शिक्षा के समर्थन में रहा है। राष्ट्रीय स्तर पर कार्यक्रमों के साथ-साथ प्रांतीय इकाइयाँ भी अपने स्तर से उस दिशा में प्रयासरत रही हैं। इस संदर्भ में अत्यन्त हर्ष का विषय है कि इस वर्ष संघ लोग सेवा आयोग (यू.पी.एस.सी.) परीक्षा में चार सर्वोच्च स्थान लड़कियों ने

सुश्री इरा सिंघल

प्राप्त किए और सुश्री इरा सिंघल ने देश में पहला स्थान प्राप्त किया है। **शारीरिक विरूपांगता के बावजूद यह सफलता प्राप्त कर इरा ने न सिर्फ समाज को गौरवान्वित किया है अपितु अपने जीवट से यह साबित किया है कि अगर आपमें लगन और दृढ़ निश्चय हो तो सीमायें आपको रोक नहीं सकतीं।** आज इरा लाखों छात्र-छात्राओं की प्रेरणास्रोत हैं। हमें भी इरा से प्रेरणा लेते हुए शिक्षा के क्षेत्र में अपने कार्यक्रमों को गतिशील बनाये रखना है और यह सुनिश्चित करना है कि कोई भी बालक-बालिका शिक्षा से वंचित न रहे।

गत १४ जून २०१५ को राँची में आयोजित सम्मेलन की अखिल भारतीय समिति की बैठक में संस्कारों के क्षरण के मुद्दे पर चर्चा हुई। यह कोई नया विषय नहीं है। सम्मेलन के स्थापना-काल से ही समाज सुधार हमारे उद्देश्यों में सर्वोपरि है एवं संस्कार का मुद्दा सीधे-सीधे समाज सुधार से जुड़ा हुआ है। संस्कारों को अक्षुण्ण रखने में हमें जितनी सफलता मिलेगी, समाज सुधार के क्षेत्र में हमारा काम उसी अनुपात में कम हो जाएगा। कहते हैं, **"द मोर यू स्वेट इन पीस, द लेस यू ब्लीड इन वार"**। ठीक उसी तरह अगर हम अपने नौनिहालों को बाल्यकाल से ही सुसंस्कार देते हैं तो युवावस्था में उनके कदम लड़खड़ाने की सम्भावना कम होती है। कच्चे घड़े पर अपने मनोनुकूल छाप दी जा सकती है।

बालक-बालिकाओं और तरूण-तरूणियों को अपने संस्कारों के प्रति जागरूक बनाने और मानवीय मूल्यों के ह्रास के प्रति सजग करने के लिए उनके सिक्षाकाल से ही उन्हें अनुप्रेरित किया जाए, इस विचार के साथ सम्मेलन समान विचार की संस्थाओं, शिक्षाविदों, समाजशास्त्रियों आदि से समन्वय कर एक सटीक कार्यक्रम तैयार करने की दिशा में प्रयासरत है। सभी प्रांतीय इकाइयों को भी इस संबंध में सूचित किया गया है और उनकी राय माँगी गयी है। मुझे आशा है कि यदि हम समस्या के सभी पहलुओं पर दृष्टि रख, उपलब्ध विकल्पों का भली-भांति आकलन कर एक समुचित योजना स्थिर करें और उस पर अपनी समग्र शक्ति से ईमानदारी के साथ काम करें तो यह पहल सम्मेलन के इनिहास में एक मील का पत्थर सबित होगी।

संगठन के विषय पर आते हुए, गत २८ जून २०१५ को उत्तरी लखीमपुर में आयोजित पूर्वोत्तर प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के प्रांतीय अधिवेशन में भाग लेने का सुअवसर प्राप्त हुआ। अधिवेशन में नवनिर्वाचित प्रांतीय अध्यक्ष श्री मधुसूदन सीकरिया ने पदभार ग्रहण किया। अत्यंत सुरुचिपूर्ण ढंग से आयोजित इस समारोह में पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं की सक्रियता उत्साहवर्धक थी।

जय समाज, जय राष्ट्र! ★★★

viom
NETWORKS

A Leading Telecom Infrastructure Company Globally

Independent entity with over 38,000 towers and over 89000 tenants

Plans to roll-out nearly 20-25,000 additional towers and take tenancy ratio to 2.5x

Strongest player in neutral host Shared In-Building Solutions (IBS)

First Indian Telecom Infrastructure Company to receive ISO 14001 & OHSAS 18001 Certification

Viom Networks Limited

Corporate Office : 14 & 15th Floor, DLF Square, Jacaranda Marg, DLF City, Phase 2, Gurgaon - 122 002. India

सम्मेलन की अखिल भारतीय समिति की बैठक

सबकी सेवा करता है मारवाड़ी समाज : विधानसभाध्यक्ष दिनेश उरांव
समाज के समक्ष नयी चुनौतियाँ : उपाध्यक्ष प्रह्लाद राय अगरवाला

"झारखंड के सर्वांगीण विकास में मारवाड़ी समाज अहम भूमिका निभा रहा है। मारवाड़ी जहाँ जाते हैं, वहीं के होकर रह जाते हैं, घुल-मिल जाते हैं। समाज के सभी वर्गों के उत्थान की बात सोचते हैं, उनकी सेवा को तत्पर रहते हैं।" ये उद्‌गार हैं झारखंड विधान सभा के अध्यक्ष **श्री दिनेश उरांव** के, जो उन्होंने अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की अखिल भारतीय समिति की बैठक में व्यक्त किए। बैठक गत १४ जून २०१५ को राँची के होलीडे होम होटल के सभागार में आयोजित की गयी थी।

झारखण्ड विधानसभाध्यक्ष श्री दिनेश उरांव को शाल उढ़ाकर सम्मानित करते झारखण्ड सम्मेलन के अध्यक्ष श्री राजकुमार केडिया।

श्री उरांव ने कहा कि प्राकृतिक संपदा से सम्पन्न झारखंड में उद्योग-धंधों की असीम संभावनाएँ हैं – मारवाड़ी समाज विकास में नींव का ईंट बने, वर्तमान सरकार हर सम्भव सहयोग करेगी। उन्होंने कहा कि राजनीति में उनका पदार्पण भी मारवाड़ी समाज की प्रेरणा से ही हुआ है।

श्री प्रह्लाद राय अगरवाला

बैठक की अध्यक्षता करते हुए सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री प्रह्लाद राय अगरवाला** ने अपने संबोधन में कहा, "अपने स्थापना-काल से ही सम्मेलन समाज सुधार के मुद्दों पर एवं सामाजिक कुरीतियों से निपटने के लिए कदम उठाता रहा है। पर्दा-प्रथा के उन्मूलन में इसकी महती भूमिका रही है। आज समाज के समक्ष नयी चुनौतियाँ हैं और समाज की प्रतिनिधि संस्था के रूप में उनके निराकरण हेतु सम्मेलन सदैव तत्पर रहता है, हरेक सम्भव प्रयास करता है।"

बैठक को संबोधित करते हुए सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री सीताराम शर्मा** ने कहा, "सम्मेलन सामाजिक परिवर्तन के लिए विचार-मंच के रूप में काम करता है। अपनी अच्छाइयों पर नहीं, अपनी प्रशंसा पर नहीं, अपनी कमियों पर ध्यान देना सम्मेलन की सबसे बड़ी खूबी है। चूँकि हमारा मुख्य उद्देश्य समाज सुधार है, महिलाओं एवं युवक-युवतियों को अपने कार्यक्रमों से जोड़ना आवश्यक है,

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा को शाल उढ़ाकर सम्मानित करते झारखण्ड सम्मेलन के निर्वाचित अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्र. गाड़ोदिया।

महिला सम्मेलन एवं युवा मंच से बेहतर समन्वय आवश्यक है। बैठकों में युवा सत्र एवं महिला सत्र का प्रावधान भी विचारणीय विषय है। चरित्र-निर्माण एवं संस्कार-रक्षण आज की अपरिहार्य आवश्यकताएँ हैं, इन पर विचार करने की आवश्यकता है।"

अपने उद्‌बोधन में सम्मेलन के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री नंदलाल रूँगटा** ने कहा, "सम्मेलन को सशक्त करने के लिए देश के हर भाग में, समाज के हर तबके तक पहुँच बनाने की आवश्यकता है। इसके लिए दौरे अत्यंत महत्त्वपूर्ण हैं।

पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री नन्दलाल रूँगटा को पुष्पगुच्छ देकर सम्मानित करते झारखण्ड सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री भागचन्द पोद्दार।

सम्मेलन के कार्यक्रम अनेक हैं किन्तु समाज सुधार मुख्य विषय है। ध्यान रखना होगा कि सुधार स्वयं से प्रारम्भ होता है – **प्रैक्टिस बिफोर प्रीचिंग**। सम्मेलन, महिला सम्मेलन एवं युवा मंच – तीनों संगठनों में समन्वय भी अपने कार्यक्रमों को गति देने के लिए आवश्यक है।"

बैठक के आरम्भ में झारखण्ड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष **श्री राजकुमार केडिया** ने सभी का स्वागत किया और झारखण्ड में अखिल भारतीय समिति के बैठक के आयोजन हेतु केन्द्रीय नेतृत्व का आभार प्रकट किया।

उपस्थित सदस्यों द्वारा स्वपरिचय देने के बाद, अखिल भारतीय समिति की पिछली बैठक (४ जनवरी २०१५; कोलकाता) का कार्यवृत्त सर्वसमिति से पारित हुआ।

राष्ट्रीय महामंत्री **श्री शिव कुमार लोहिया** ने अखिल भारतीय समिति की पिछली बैठक के बाद के सम्मेलन के कार्यकलापों पर अपनी रपट प्रस्तुत की। राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष **श्री गोपाल अग्रवाल** ने सम्मेलन की आर्थिक स्थिति पर अपनी रपट प्रस्तुत की। उन्होंने कहा कि सबकी भागेदारी से आर्थिक अवस्था उन्नति पर है एवं स्थिति संतोषजनक है।

सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री सुरेन्द्र लाठ** ने ओडिशा, छत्तीसगढ़ एवं मध्य प्रदेश प्रांतों, जिनके वे प्रभारी हैं, में संगठन की स्थिति पर संक्षिप्त रपट प्रस्तुत की। उन्होंने मध्य प्रदेश एवं छत्तीसगढ़ के अपने दौरों के विषय में बताया और छत्तीसगढ़ प्रांत के पदाधिकारियों के चुनाव एवं प्रांतीय अधिवेशन हेतु तदर्थ समिति के गठन पर प्रगति के विषय में सदस्यों को अवगत कराते हुए श्री पुरोषोत्तम सिंघानिया के संयोजक एवं श्री अमर सिंह के सह-संयोजक के रूप में मनोनयन की सूचना दी। श्री लाठ ने कहा कि राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रामअवतार पोद्दार के हालिया प्रांतीय दौरों से उत्साह एवं सक्रियता बढ़ी है।

श्री सुरेन्द्र लाठ

श्री विनय सरावगी

राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री विनय सरावगी** ने अपने प्रभार के प्रांतों बिहार, झारखण्ड एवं उत्तर प्रदेश में संगटन की स्थिति पर चर्चा करते हुए बिहार एवं झारखण्ड प्रांतों की सक्रियता को प्रशंसायोग्य बताया। उन्होंने कहा कि उत्तर प्रदेश में संगठन-विस्तार की अपार संभावनाएँ हैं जिसके लिए और प्रयासों की आवश्यकता है जिनमें युवा मंच की सहभागिता भी हो तो परिणाम उत्तम होंगे।

श्री सरावगी ने समिति के विचारार्थ दो निम्नलिखित प्रस्ताव रखे :

प्रस्ताव १ : "अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के संविधान या अन्य प्रलेखों में, जहाँ भी किसी प्रांत की इकाई के सन्दर्भ में 'प्रादेशिक' शब्द का प्रयोग किया गया है, उसे 'प्रादेशिक/प्रांतीय' समझा जाये। इस आशय का संशोधन संविधान में किया जाये। साथ ही संविधान के पृष्ठ ५ (धारा १) में दिए परिभाषाओं में 'प्रादेशिक' शब्द की परिभाषा भी जोड़कर इसे स्पष्ट किया जाये।"

प्रस्ताव २ : "एकल सदस्यता लागू करते समय यह निर्णय लिया गया था कि प्रांतीय सम्मेलन नये सदस्यों सम्बंधी सूचना, सदस्यता फार्म की प्रतिलिपि एवं ३० प्रतिशत सदस्यता शुल्क केन्द्रीय कार्यालय को भेजेंगे, जिससे उन सदस्यों के नाम सदस्यता खाते में सूचीबद्ध किये जा सकें।

यह चिंता का विषय है कि अनेक प्रांतों द्वारा इसे लागू नहीं किया जा रहा है, जिससे सदस्यों को केन्द्र में सूचीबद्ध नहीं किया जा सका है। इस संबंध में बाध्यतापूर्वक समिति यह निर्णय लेती है कि प्रांतों द्वारा नये सदस्य बनाने के एक माह मे अंदर उसकी आवश्यक जानकारी, सदस्यता फार्म की प्रतिलिपि एवं ३० प्रतिशत धनराशि केन्द्रीय कार्यालय को भेजने की बाध्यता होगी। अन्यथा सदस्यता के लिये आवेदनकर्ता को सम्मेलन के सदस्य के रूप में स्वीकृत नहीं समझा जाएगा एवं प्रांतों द्वारा ली गयी सम्पूर्ण धनराशि आवेदनकर्ता को एक माह के अंदर लौटा देना होगी।

समिति यह भी निर्णय लेती है कि प्रांतों द्वारा बनाये गये सदस्य की सदस्यता उपरोक्त आवश्यकताओं को पूर्ण किये बिना प्रभावी नहीं होगी। इसकी सूचना प्रांतों द्वारा छापे गये प्रत्येक सदस्यता फार्म में देने की बाध्यता होगी।"

झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष श्री राजकुमार केडिया ने इन प्रस्तावों का समर्थन किया और समिति ने इन प्रस्तावों को सर्वसम्मति से पारित किया।

बैठक में उपस्थित पदाधिकारी / सदस्यगण

अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के पूर्व अध्यक्ष **श्री अनिल कुमार जाजोदिया** ने गत ३१ मई २०१५ को सम्मेलन एवं युवा मंच के शीर्ष नेतृत्व की संयुक्त बैठक एवं राष्ट्रीय समन्वय समिति के गठन की प्रक्रिया प्रारम्भ होने को एक अच्छी पहल बताया। उन्होंने कार्यक्रमों में समर्थन हेतु युवा मंच की ओर से सम्मेलन का आभार भी प्रकट किया।

प्रांतीय अध्यक्षों – बिहार के **श्री पवन कुमार सुरेका**, पश्चिम बंग के **श्री बिजय डोकानियाँ**, उत्कल के **श्री श्याम सुंदर अग्रवाल** एवं झारखंड के **श्री राजकुमार केडिया** ने अपने-अपने प्रांतों के क्रियाकलापों के विषय में संक्षेप में बताया एवं भावी दृष्टि एवं कार्यक्रमों पर चर्चा की। उत्तरी दिल्ली शाखा के अध्यक्ष **श्री शान्ति रामसीसरिया** ने दिल्ली में सम्मेलन-संगठन की प्रगति के विषय में बताया। झारखंड सम्मेलन के महामंत्री **श्री बसंत कुमार मित्तल** ने प्रांतीय सम्मेलन की गतिविधियों पर विस्तृत रपट प्रस्तुत की।

निर्वाचित प्रांतीय अध्यक्षों – बिहार के **श्री निर्मल कुमार झुनझुनवाला** एवं झारखंड के **श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया** ने बेठक को संबोधित करते हुए अपनी योजनाओं एवं भावी कार्यक्रमों की झलक दी।

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी महिला मंच की संस्थापक-अध्यक्षा **श्रीमती पुष्पा चोपड़ा** ने सम्मेलन, महिला सम्मेलन एवं युवा मंच में समन्वय एवं साथ मिलकर काम करने की आवश्यकता पर बल दिया।

उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के निवर्तमान अध्यक्ष **श्री नकुल अग्रवाल**, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री **श्री संतोष सराफ**, **श्री जगदीश पाटोदिया** आदि ने भी अपने विचार रखे।

बैठक में राष्ट्रीय संगठन मंत्री **श्री संजय हरलालका**, राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्रीगण **श्री कैलाशपति तोदी** एवं **श्री अमित सरावगी**, झारखंड सम्मेलन के संस्थापक अध्यक्ष श्री वासुदेव प्रसाद बुधिया, पूर्व-अध्यक्ष **श्री भागचंद पोद्दार**, पूर्व राष्ट्रीय महामंत्री **श्री भानीराम सुरेका** सहित समिति के गणमान्य सदस्य उपस्थित थे।

अंत में बैठक के संयोजक **श्री किशोर मंत्री** ने धन्यवाद-ज्ञापन किया एवं बैठक संपन्न हुयी। ★★★

समाचार-सार

उत्तराखंड सम्मेलन ने नेपाल-राहत हेतु बढ़ाया हाथ

अप्रैल २०१५ के आखिरी सप्ताह में नेपाल में आए विध्वंसक भूकम्पों के बाद भूकम्प-पीड़ितों के सहयोग हेतु उत्तराखंड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन ने मई २०१५ के प्रथम सप्ताह में राहत सामग्री वितरित की। राहत सामग्री दो ट्रकों पर लादकर नेपाल के त्रिशूली और सनसुरी जिलों में ले जायी गयी और वहाँ नेपाली सेना को साथ लेकर वितरण किया गया।

उत्तराखंड प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष **श्री रणजीत जालान** ने बताया कि भविष्य में भी वे राहत-सामग्री भेजते रहेंगे। इस पवित्र कार्य में समान विचारों वालो संस्था श्री राणी सती ज्योति मंडल (वीरगंज, नेपाल) ने भी सहयोग दिया।

झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के हजारीबाग प्रमंडल का अधिवेशन

संगठन की मजबूती से ही समाज का विकास : विनय सरावगी

दीप प्रज्ज्वलित कर अधिवेशन का उद्घाटन करते सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विनय सरावगी; साथ में परिलक्षित हैं झारखण्ड सम्मेलन के अध्यक्ष श्री राजकुमार केडिया, निर्वाचित प्रान्तीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया एवं अन्य।

"मारवाड़ी समाज विकास का द्योतक है। मारवाड़ी जहाँ भी गए हैं, वहाँ के लोगों के साथ मिलकर क्षेत्र के विकास में अहम भूमिका अदा की है, सदैव जनकल्याण का कार्य किया है। किन्तु समाज के विकास हेतु संगठन अनिवार्य है, सम्मेलन को सशक्त कर ही हम समाज विकास के अपने उद्देश्यों को प्राप्त कर सकते हैं।" ये उद्गार हैं अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री विनय सरावगी** के जो उन्होंने झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के हजारीबाग प्रमंडल के प्रमंडलीय अधिवेशन को संबोधित करते हुए व्यक्त किए। दीप प्रज्ज्वलित कर अधिवेशन का उद्घाटन करने के बाद श्री सरावगी ने अपने अभिभाषण में अपनी संस्कृति-संस्कारों को अक्षुण्ण रखने का आह्वान किया और समाज की प्रतिभाओं को आगे बढ़ने के लिए सहायता देने पर बल दिया। अधिवेशन १५ जून २०१५ को गोला रोड, रामगढ़ स्थित मारवाड़ी धर्मशाला सभागार में आयोजित किया गया।

अधिवेशन में बोलते हुए झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष **श्री राजकुमार केडिया** ने सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के प्रयासों को और गति देने पर बल दिया। निर्वाचित प्रांतीय अध्यक्ष **श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया** ने समाज के सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा का स्तर उपर उठाने को अनिवार्य बताया।

इस अवसर पर पूर्व विधायक **श्री शंकर चौधरी** को राजनीति, शिक्षा एवं समाजसेवा के क्षेत्रों में उनके सराहनीय कार्यों हेतु सम्मानित किया गया।

अधिवेशन को अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन की पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षा **अरूणा जैन**, **धर्मचंद जैन**, **प्रकाश पटवारी**, **महेन्द्र भागनिया**, **महावीर बेरलिया** एवं सम्मेलन के रामगढ़ जिलाध्यक्ष **नानूराम गोयल** ने भी संबोधित किया। प्रांतीय महामंत्री **श्री बसंत कुमार मित्तल** ने संचालन किया।

अधिवेशन में **रीना अग्रवाल, द्रोपति बेरलिया, राधेश्याम मोदी, सीताराम अग्रवाल, आनंद हेमतसरिया, बाबूलाल बंसल, श्रीनिवास अग्रवाल, श्याम सुंदर चौधरी, रामेश्वरलाल पटवारी, कुंजलाल अग्रवाल, महावीर जैन, विजय अग्रवाल, गोपालराम अग्रवाल, रामदत्त शर्मा, जगदीश अग्रवाल, दीपचंद्र अग्रवाल, कैलाश साहू, राजकुमार बजाज, किशोर जाजू, आनंद अग्रवाल, प्रवीण राजगड़िया, उमेश राजगड़िया, शंकरलाल अग्रवाल, मनोज मित्तल, संगीत बेरलिया, नंदकिशोर गुप्ता, कैलाश शाह** सहित समाज के गणमान्य महिलाएँ-पुरुष अच्छी संख्या में उपस्थित थे। ★ ★ ★

झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के पलामू प्रमंडल का अधिवेशन

मारवाड़ी और मानवता जुड़े हुए : सांसद बी.डी. राम

गत २१ जून २०१५ को झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के पलामू प्रमंडल का प्रमंडलीय अधिवेशन मेदिनीनगर स्थित अग्रसेन भवन में आयोजित किया गया। समारोह का उद्घाटन पलामू के सांसद **श्री बिष्णु दयाल राम** ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। अपने उद्बोधन में सांसद ने कहा कि मारवाड़ी समाज मानवता और उदारता के लिए जाना जाता है। मारवाड़ी और मानवता के बीच अन्योनाश्रय संबंध है। राष्ट्र के विकास में मारवाड़ियों की भूमिका अविस्मरणीय है। उन्होंने पलामू क्षेत्र में विकास की अपार संभावनाओं का भी जिक्र किया और इसके लिए सबकी भागीदारी का आह्वान किया।

सांसद श्री बिष्णु दयाल राम द्वारा अधिवेशन का उद्घाटन; साथ में राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री विनय सरावगी, प्रांतीय अध्यक्ष श्री राजकुमार केडिया, निर्वाचित प्रांतीय अध्यक्ष श्री गोवर्धन प्रसाद गाड़ोदिया, प्रांतीय महामंत्री श्री बसंत मित्तल एवं अन्य।

समारोह के विशिष्ट अतिथि अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष **श्री विनय सरावगी** ने कहा कि मारवाड़ी समाज ने अपनी उद्यमिता, समरसता एवं समाज सेवा के बल पर अपनी छवि बनाई है। उन्होंने कहा कि आज का युगधर्म है कि मारवाड़ी जहाँ कहीं भी हों, संगठित होकर उस स्थान के सर्वांगीण विकास में भागीदार बनें और अपने पूर्वजों की गौरवमयी परम्परा को आगे बढ़ायें।

अधिवेशन की अध्यक्षता करते हुए झारखण्ड सम्मेलन के प्रांतीय अध्यक्ष **श्री राजकुमार केडिया** ने समरसता और सेवा की भावना रखने पर जोर दिया। उन्होंने आगामी ४-५ जुलाई २०१५ को झारखण्ड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के अधिवेशन के विषय में भी बताया और सबकी उपस्थिति का अनुरोध किया।

श्री प्रमोद कुमार (उर्फ नवल) तुलस्यान ने पलामू में मारवाड़ी समाज के संगठनात्मक इतिहास पर प्रकाश डाला — इस विषय पर एक बुकलेट का वितरण भी किया गया। श्री तुलस्यान ने क्षेत्र में समाज द्वारा किये जा रहे सेवाकार्यों का भी संक्षिप्त विवरण दिया।

इस अवसर पर **अनुभूति कुमारी, साक्षी जैन, प्रियंका मिश्रा, अनुज्या खेतान, समीक्षा दारूका, राघव तुलस्यान, चिराग सिंघानिया** सहित समाज के मेधावी छात्र-छात्राओं का सम्मान किया गया। समारोह में गुमला की एस.डी.ओ. **सीमा उदयपुरी** एवं स्थानीय पार्षद **बबीता जैन** को भी सम्मानित किया गया।

अधिवेशन में झारखण्ड सम्मेलन के प्रांतीय उपाध्यक्ष **चंडी प्रसाद डालमिया**, प्रांतीय महामंत्री **बसंत कुमार मित्तल, कृष्ण कुमार केजरीवाल, सुशील अग्रवाल, सुरेश उदयपुरी, राजेश उदयपूरी, सुरेश भीमसरिया, रामावतार शर्मा, मंगल सिंह, प्रमोद कमार तुलस्यान, मुकेश उदयपुरी, अंशुल उदयपुरी, राजेश अग्रवाल, विनोद उधयपुरी, पप्पु तुलस्यान, सुरेश भिवानिया** सहित भारी संख्या में पुरुष-महिलायें उपस्थित थीं। समारोह का कुशल संचालन **श्री विनोद बोहरकड़ा** ने किया। ★★★

IISD

SREI Foundation

A Gateway to Careers

"Educate Morally & Technically"
— Swami Vivekananda

Swami Vivekananda SREI Merit Scholarship upto 100%

Quality Higher Education at lowest prices
– a corporate social responsibility

2 Yrs. PGDM (AIMA ALL INDIA MANAGEMENT ASSOCIATION) ₹ 1,00,000

2 Yrs. # MBA + PGDM (AIMA ALL INDIA MANAGEMENT ASSOCIATION) ₹ 1,70,000

3 Yrs. # BBA ₹ 75,000

2 Yrs. # MBA + PGPM ₹ 85,000

3 Yrs. # BCA ₹ 75,000

2 Yrs. # MBA (Hospital Mgmnt.) ₹ 95,000

DUAL SPECIALISATION AVAILABLE

ELIGIBILITY & SELECTION
FOR MBA/PGDM

- BACHELOR'S DEGREE IN ANY DISCIPLINE WITH 50% SCORE
- APPEARING FOR FINAL DEGREE EXAMINATION
- GROUP DISCUSSION
- PERSONAL INTERVIEW
- APTITUDE TEST
- APPLICANTS WITH CAT / MAT / XAT ARE PREFERRED

Assistance for placement

- Eminent Faculty
- Online Application Facility
- Regular / Weekend Classes
- Hostel
- AC Classrooms
- P G Accommodation

Complimentary Courses

- Spoken English
- Foreign Languages
- Bengali & Sanskrit
- ERP Training (Microsoft Certified)
- Company Secretaryship / Chartered Accountancy / Administrative Services
- Entrepreneurship Development
- Theology

Other Courses :

- Company Secretaryship
- Advocateship
- E-Tuition
- Montessori Teacher Training (1 Year Diploma)
- Retail Management
- Preparatory course for Entrance Examination of MD, MS, MRCP (Medicine) – Part-I and DNB – Part-I
- Language Courses : Functional English, Spoken English, Spanish, Italian, Russian, German, Chinese, Japanese, Arabic, Burmese, Persian, French, Korean, Sanskrit, Bengali and Hindi
- Indian Administrative Service (IAS) and Allied Services Examinations (Prelim and Main)
- WBCS (Executive) and Judicial Services Examinations (Prelim and Main)
- Chartered Accountancy (CPT, IPCC & Final)
- NDA / CDS – UPSC Examinations and SSB Interview
- Certificate Course on Computer Applications
- Advanced Diploma in Financial Management
- Vocational & Technical Training
- Entrepreneurship Development
- Diploma in Banking and Finance
- Certificate course on theology

Recognised by UGC, Ministry of HRD, Govt. of India, Approved by Joint Committee of UGC, AICTE & DEC

INSTITUTE FOR INSPIRATION & SELF DEVELOPMENT

IB-200/1, Sector-III, Salt Lake, Kolkata - 700 106
Ph : 2335 2378/2861, Fax : 2335 2379
E-Mail : info@iisdedu.in
Website : www.iisdedu.in

9, Syed Amir Ali Avenue, 5th Floor
Kolkata- 700017, Ph : (033) 2290 0338

सम्मेलन एवं युवा मंच करेंगे मिलकर काम

गत ३१ मई २०१५ को कोलकाता में अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं अखिल भारतीय मारवाड़ी युवा मंच के शीर्ष नेतृत्व की एक विशेष बैठक संपन्न हुई, जिसमें सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री रामअवतार पोद्दार** एवं पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण **श्री सीताराम शर्मा** व **श्री नंदलाल रूंगटा** तथा मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री रवि अग्रवाल** एवं पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्षगण **श्री बलराम सुल्तानिया** व **श्री अनिल कुमार जाजोदिया** सहित दोनों संस्थाओं के शीर्ष पदाधिकारी उपस्थित थे।

बैठक में समाज को नई दिशा प्रदान करने व मजबूती देने हेतु मारवाड़ी समाज के सर्वांगीण विकास, सांगठनिक समन्वय एवं नये प्रकल्पों पर विस्तार से चर्चा की गयी। बैठक में वैचारिक मंथन के उपरांत निम्न विषयो पर आम सहमति बनी :

- मारवाड़ी समाज के सर्वांगीण विकास, वर्तमान चुनौतियों से निपटने एवं प्रभावी आवाज बनने हेतु सम्मेलन एवं युवा को मिलकर काम करना चाहिए एवं इसके लिए एक समन्वय समिति का गठन किया जाये।
- मंच के ४५ वर्ष से अधिक उम्र के सदस्यों को सम्मेलन की सदस्यता हेतु प्रेरित किया जाये तथा सम्मेलन द्वारा भी ४० वर्ष से कम आयु के सभी मारवाड़ी युवाओं को मंच की सदस्यता हेतु प्रेरित किया जाये।
- सम्मेलन एवं मंच के पदाधिकारियों को एक दूसरे की राष्ट्रीय एवं प्रान्तीय बैठकों में ससम्मान बुलाया जाये।
- सम्मेलन एवं मंच द्वारा राष्ट्रीय कार्यक्रमों में परस्पर सहयोग किया जाये।

बैठक में (बांये से दायें) सर्वश्री नन्दलाल रूँगटा, सीताराम शर्मा, रामअवतार पोद्दार, रवि अग्रवाल, बलराम सुल्तानिया एवं अनिल जाजोदिया।

सम्मेलन की उत्तरी दिल्ली शाखा की स्थापना; शान्ति रामसीसरिया हुए पहले अध्यक्ष

गत २४ मई २०१५ को जी. टी. करनाल रोड, दिल्ली स्थित 'बीकानेरवाला' में समाजसेवी उद्योगपति **श्री एस. एस. चमड़िया** की अध्यक्षता मे सम्मेलन की एक सभा कर दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अंतर्गत 'उत्तरी दिल्ली शाखा' स्थापित की गयी। **श्री शान्ति कुमार रामसीसरिया** को शाखा का संस्थापक-अध्यक्ष चुना गया।

मनोनीत शाखाध्यक्ष श्री शान्ति कुमार रामसीसरिया (दायें) को बधाई देते दिल्ली सम्मेलन के अध्यक्ष श्री पवन कुमार गोयनका।

सभा को संबोधित करते हुए दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के अध्यक्ष **श्री पवन कुमार गोयनका** ने वर्तमान सामाजिक-राजनैतिक-आर्थिक परिस्थितियों के आलोक में शीघ्रातिशीघ्र संगठित होने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने सम्मेलन के इतिहास, कार्यक्रमों एवं कार्य-प्रणाली से उपस्थित समाजबंधुओं को अवगत कराया। समाज-सुधार एवं शिक्षा के क्षेत्र में सम्मेलन द्वारा उठाए जा रहे कदमों के विषय में भी उन्होंने विस्तार से बताया।

नवमनोनीत शाखाध्यक्ष श्री रामसीसरिया ने अपने मनोनयन हेतु आभार व्यक्त करते हुए कहा कि वे समाज के सदस्यों को साथ लेकर चलेंगे एवं शाखा के माध्यम से समाजहित में कार्य करने का हर सम्भव प्रयास करेंगे। उन्होंने नई शाखा के लिये श्री अशोक कुमार खेतान को वरिष्ठ उपाध्यक्ष, श्री महेश बगड़िया और श्रीमती संजना अग्रवाल को उपाध्यक्ष, श्री विनोद जाजोदिया को महामंत्री, श्री अनिल लोहिया को मंत्री, श्री आनंद अगरवाल को कोषाध्यक्ष एवं श्रीमती सीमा जाजोदिया को संयोजक (महिला समिति) मनोनीत किया।

दिल्ली प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के महामंत्री **श्री राज कुमार मिश्र** ने सभा का संचालन किया और उपाध्यक्ष **श्री एल.पी. भूतोड़िया** ने धन्यवाद-ज्ञापन किया। इस अवसर पर पश्चिमी दिल्ली शाखाध्यक्ष श्री एन. एम. अग्रवाल, मंत्री श्री एस. पी. लाहोटी, गाजियाबाद शाखा के उपाध्यक्ष श्री ओम जालान सहित गणमान्य स्थानीय समाजबंधु एवं महिलायें उपस्थित थीं। ★★★

नई पीढ़ी के मारवाड़ी वंशानुगत व्यावसायों से बाहर निकलने का जोखिम उठा रहे हैं!

बड़ी संख्या में, खासकर छोटे शहरों से निकले, युवक/युवतियाँ नये व्यावसाय खड़े कर सफलता पा रहे हैं।

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में वे राजपूताना (अब राजस्थान) के बंजर मारवाड़ क्षेत्र से निकले और "जहाँ न जाये बैलगाड़ी, वहाँ जाये मारवाड़ी" कहावत को चरितार्थ करते हुए पूरे भारतीय उपमहाद्वीप में फैल रहे हैं। उन्होंने मूलतः कृषि-आधारित भारतीय अर्थव्यवस्था को उद्योगों पर आधारित अर्थव्यवस्था में बदलने की प्रक्रिया में मुख्य भूमिका निभाई, उत्प्रेरक का कार्य किया और अपने उद्योग धंधों की जिम्मेवारी अपनी अगली पीढ़ी को दी।

लेकिन यह प्रवृति अब ह्रास पर है। **पहले की तरह अपने पूर्वजों के व्यावसायों को जारी न रख, मारवाड़ी लड़के अब अपनी खुद की राह बना रहे हैं और इनमें से कई अपने नये धंधों में सफलता भी पा रहे हैं – वस्तुतः यह व्यावसायिक 'धर्मशास्त्र' से 'तकनीक' की ओर जाने की पहल है।**

अलग-अलग रास्ते –विनीत जैन लोनस्ट्रीट.इन (Loanstreet.in) के सी.ई.ओ. और को-फाउंडर हैं; दिवाकर चित्तौरा इंटेलीपाट सॉफ्टवेयर सोल्यूशंस के संस्थापक–सी.ई.ओ. और टेक्निकल डायरेक्टर हैं; हितेश खण्डेलवाल स्मार्टप्रिक्स.कॉम (smartprix.com) के को-फाउंडर हैं, और आशुतोष मोदी जीवेम एजुकेशन चलाते हैं। इनमें से अधिकतर ने अपना व्यावसाय स्थापित करने से पहले मार्की कम्पनियों में काम किया है।

"मेरे दादाजी, स्व. गुलाबचन्द जैन बोटलवाला, आगरा से बोतलों का निर्यात करते थे जबकि मेरा परिवार हवाई जहाज के डिस्मेंटलिंग और स्क्रेप के व्यावसाय में था। लेकिन मैं अब यह एन्ड-टू-एन्ड लोन कंसलटेन्सी सर्विस चलाता हूँ।" जैन, जिन्होंने दो वर्ष पूर्व अपना व्यावसाय शुरू करने से पहले बजाज ग्रुप, एच.एस.बी.सी., आई.सी.आई.सी.आई बैंक और जेनरल इलेक्ट्रिक के साथ बारह वर्षो तक काम किया, कहते हैं।

खून में व्यावसाय – "हम मारवाड़ियों के खून में ही व्यावसाय है। अब हम अपने परम्परागत व्यावसाय से आगे बढ़कर नए भौगोलिक क्षेत्रों और नए व्यावसायों में आ रहे हैं।" उन्होंने बिजनेस लाइन से कहा। वर्तमान में मुम्बई, बेंगलुरू, इन्दौर और दिल्ली में काम कर रही उनकी फर्म अगले कुछ महीनों में भारत के १७ और शहरों में अपनी शाखायें खोलने वाली है।

दिवाकर चितौरा के पिता लेखक थे और राजस्थान सरकार की नौकरी करते थे, जबकि उनकी माँ एक पब्लिकेशन हाउस चलाती थीं। अमेरिकन एक्सप्रेस, मर्सीडिज बेंज और विप्रो में सालों काम करने के बाद उन्होंने इन्टेलीपाट शुरु की जो एक ई-लर्निंग कम्पनी है और कार्यरत प्रोफेशनल्स को बड़े डाटा, बिजनेस इंटेलीजेंस और क्लाउड टेक्नोलॉजी पर ऑनलाइन और कार्पोरेट ट्रेनिंग देती है। बेंगलुरू और जयपुर से काम कर रही इस फर्म के ४० कार्पोरेट क्लाइंट और दो लाख से ज्यादा यूजर हैं।

आई.आई.टी. दिल्ली में पढ़ते-पढ़ते ही, अल्वर (राजस्थान) के एक पंसारी के पुत्र, हितेश खण्डेलवाल, ने कुछ और भी करने का निर्णय लिया और स्मार्टप्रिक्स.कॉम स्थापित की जो एक ऑनलाइन सर्विस है और ग्राहकों को उत्पादों एवं मूल्यों की तुलना मुहैया कराती है। "हमें विज्ञापनों से आय के अतिरिक्त विक्रेताओं से भी कमीशन मिलता है", खण्डेलवाल कहते हैं जिनकी कम्पनी राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र नोएडा में स्थित है।

आशुतोष मोदी के लिए, जिनके पिता डेढ़ लाख की आबादी वाले राजस्थान के एक छोटे नगर झुंझुनू में शैक्षिक संस्थान चलाते थे, अपना पेशा चुनना कठिन नहीं था; वे २००९ में स्थापित एक कम्पनी जीवेम एजुकेशन के माध्यम से २२ शैक्षिक एवं स्किल डेवलपमेंट संस्थान चलाते हैं जिनमें १५,००० छात्र हैं; और एक ई-लर्निंग प्रोटल इन्ट्रेन्सप्राइम.कॉम के प्रमुख हैं। लार्सन एंड टूर्बो, इंफोटेक, हार्लेक्विन और मिल्स एण्ड बून के साथ मोदी के पूर्व अनुभव भी उनके काम आये।

(**'बिजनेस लाइन' से साभार**)

रचना जैन, डिब्रूगढ़

निक्की जालान, नलबाडी

प्रीति पारीक, शिवसागर

शीतल सोमानी, देरगाँव

प्रीति हरलालका, बंगाईगाँव

माया चांडक, नारायणपुर

अनिता शर्मा, चाबुआ

डॉ. पायल शर्मा, तिनसुकिया

रंजिता धनावत, धुबड़ी

कविता अग्रवाल, आमगुड़ी

असम में हाल में ही सम्पन्न निगम चुनावों में समाज के प्रत्याशियों को उत्साहवर्धक सफलता

संतोष पोद्दार, बरपेटारोड

विनोद कोठारी, नगाँव

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की बधाई एवं शुभकामनायें !

बजरंगलाल मित्तल, डिब्रूगढ़

हरीश चांडक, नारायणपुर

हेमंत शर्मा, तिनसुकिया

ऋषभ सिपानी, तेजपुर

अंकुर गुप्ता, जोरहाट

प्रदीप अग्रवाल, नगाँव

गोपाल पोद्दार, नगाँव

प्रेमचन्द : सामाजिक चेतना के पुरोधा साहित्यकार

– शिव कुमार लोहिया

'हमारा काम तो केवल खेलना है - खूब दिल लगाकर खेलना - खूब जी-तोड़ खेलना, अपने को हार से इस तरह बचाना मानो हम दोनों लोकों की सम्पत्ति खो बैठेंगे। किन्तु हारने के पश्चात पटखनी खाने के बाद धूल झाड़ खड़े हो जाना चाहिए और फिर ताल ठोंककर विरोधी से कहना चाहिए कि एक बार फिर जैसा कि सूरदास कह गये हैं, "तुम जीते हम हार। पर फिर लड़ेंगे"। ये बात प्रेमचंद ने अपने मित्र को एक पत्र में अपने जीवन की परेशानियों के बारे में लिखा था। इसकी शैली से ही समझ सकते हैं कि परिस्थितियों का मुकाबला करने के लिए उनमें कितना सकारात्मक सोच था। प्रारंभ से ही उनका जीवन कठिनाइयों से भरा था। गरीबी का जीवन उन्होंने जीया था। शायद इसी वजह से उनकी लेखनी में दबे-कुचले लोगों की व्यथा एवं यथार्थ स्थिति का मार्मिक विवरण मिलता है। मुंशी प्रेमचंद भारतीय साहित्य जगत के अहम नक्षत्र के। उन्होंने पहली बार कथा-कहानियों को यथार्थ के धरातल पर लाकर सामाजिक समस्याओं को अपनी लेखनी के माध्यम से उजागर किया। साम्प्रदायवाद, धार्मिक उन्माद, भ्रष्टाचार, जमींदारी प्रथा, गरीबी एवं उपनिवेशवाद उनकी रचनाओं के केन्द्रबिन्दु थे। साधारण बोलचाल की भाषा का प्रयोग कर उन्होंने अपनी रचनाओं का ऐसा साम्राज्य स्थापित किया जहाँ पर उन्हें उपन्यास सम्राट की पदवी से नवाजा गया। साहित्यकार के साथ वे एक महान समाज सुधारक भी थे। सन् १९२१ में गांधीजी के आह्वान पर उन्होंने अपनी सरकारी नौकरी से पदत्याग कर दिया। अपनी लेखनी के माध्यम से सामाजिक चेतना जागृत करने के यज्ञ में जुट गये। लगभग ३०० कहानियाँ, १२ उपन्यास एवं २ नाटक उन्होंने अपने जीवन काल में लिखे। उनके प्रसिद्ध-रचनाओं में मुख्य हैं - पंच परमेश्वर, ईदगाह, शतरंज के खिलाड़ी, पूस की रात, बड़े घर की बेटी, कफन, उधार की घड़ी, नमक का दारोगा, गबन, गोदान एवं निर्मला।

मुंशी प्रेमचन्द
(३१ जुलाई १८८० – ०८ अक्तूबर १९३६)

अपनी रचनाओं में गाँव का जीवन एवं वहाँ की समस्याओं का उन्होंनें बेबाकी से मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। लेखनी को मनोरंजन के साधन की जगह सामाजिक न्याय दिलाने के हथियार के रूप में सर्वप्रथम प्रयोग उन्होंने किया। उनके कथानक के सभी चरित्र साधारण व्यक्ति ही हुआ करते थे। वे स्वयं भी एक सरल एवं सहज व्यक्ति थे। उनसे पूछा गया कि वे अपने बारे में क्यों नहीं लिखते। उन्होंने कहा - "मेरी ऐसी क्या महानता है, जिसके बारे में लोगों को बताने की आवश्यकता है। मैं देश के करोड़ों लोगों की तरह सादा जीवन व्यतीत करता हूँ। मैं एक गरीब अध्यापक हूँ, जो कि पारिवारिक समस्याओं से जूझ रहा हूँ।"

प्रेमचंद का वास्तविक नाम धनपतराय था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा मदरसे में हुई। जब वे मिडिल में थे तभी से उन्होंने उपन्यास पढ़ना प्रारंभ कर दिया। उपन्यास का ऐसा नशा उन पर छाया कि वे किताब की दूकान पर बैठकर सब उपन्यास पढ़ डालते थे। दो-तीन साल के अन्दर उन्होंने सैंकड़ों उपन्यास पढ़ डाले। तेरह वर्ष की उम्र में उन्होंने लिखना प्रारंभ किया एवं मरते दम तक लिखते रहे। प्रेमचंद की रचनाओं ने देश की कई पीढ़ियों को प्रभावित किया है। उनकी रचनाओं का देश-विदेश की कई भाषाओं में अनुवाद हुआ है। सुप्रसिद्ध साहित्यकार एवं चलचित्र निर्देशक गुलजार का कहना है, "मेरी माँ एक खास अंदाज में तंदूरी रोटी बनाती थी। प्रेमचंद को पढ़ा तो लगा कि उन्होंने मेरी माँ के बारे में ही लिखा है। कॉलेज में दाखिले के बाद प्रेमचंद को पढ़कर मुझे जमींदारी-प्रथा एवं गरीब-अमीर के बीच की खाई के बारे में जानकारी मिली। फिल्म बनाते वक्त मुझे लगा कि प्रेमचंद सभी चरित्रों का मार्मिक चित्रण करते थे। यहाँ तक कि पशुओं के गतिविधियों का विस्तार से विवरण देते थे।" लेखनी के अतिरिक्त उन्होंने अध्यापन एवं सम्पादन का कार्य भी किया था। एक फिल्म मजदूर की कहानी भी उन्होंने लिखी थी। गरीबी एवं लंबी बीमारी की मार से ग्रसित ५६ वर्ष की उम्र में ही उनका देहांत हो गया।

३१ जुलाई को उनकी जयंती पर उस महामानव को शत्-शत् नमन! ★ ★ ★

माँ गायत्री है वेदों की जननी

– ललित गर्ग

भारतभूमि की यह विशेषता है कि यह भूमि कभी भी संतों, महापुरुषों, देवज्ञों, विद्वानों से खाली नहीं हुई, रिक्त नहीं हुई। स्वामी विवेकानन्द, दयानन्द सरस्वती, रामकृष्ण परमहंस, टैगोर और गांधी सरीखे महापुरुष हमारे आदर्श रहे हैं। उनके कर्म अनुकरणीय हैं। उन्होंने क्या हमारा मार्गदर्शन नहीं किया? सत्य और अहिंसा का पाठ नहीं पढ़ाया? गौतम बुद्ध और महावीर स्वामी इसी पावन धरती की उपज थे। इन्होंने सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह, एकता, विश्वबन्धुत्व, समानता, भेद-भाव रहित जीवन, सद्‌वृत्ति, सद्‌ज्ञान, अहिंसा व राष्ट्रीयता का नारा दिया।

हिंदू धर्म में माँ गायत्री को वेदमाता कहा जाता है अर्थात सभी वेदों की उत्पत्ति इन्हीं से हुई है। गायत्री को भारतीय संस्कृति की जननी भी कहा जाता है। धर्मशास्त्रों के अनुसार ज्येष्ठ मास के शुक्ल पक्ष की दशमी को माँ गायत्री का अवतरण माना जाता है। इस दिन को हम गायत्री जयंती के रूप में मनाते है। हिन्दू संस्कृति में माँ गायत्री की महिमा अपरम्पार है। उनकी शक्ति अद्वितीय है, चिर नवीन है, असंदिग्ध है। वे मानव मात्र के कल्याण, उपकार, सुख, सुविधा, शान्ति, आध्यात्मिकता की ओर बढ़ने, ईशभक्ति, संस्कृत की पहचान, आनन्द, भौतिक उन्नति आदि की हेतु हैं। गायत्री मंत्र-

'ऊँ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्'

-यह सभी मंत्रों में सर्वशक्तिमान मंत्र है। इस मंत्र का विधिपूर्वक जाप एवं गायत्री उपासना से अकिंचन भी ज्ञानी-ध्यानी बन सकती है। रोगी रोग-मुक्त हो जाता है। निर्धन धनी बन सकता है। कुकर्मी सुकर्मी बन सकता है। जीवन के सन्तापों से मुक्ति पा सकता है। अभावों का नाश कर खुशहाल जीवन जी सकता है। सुख-शान्ति-आनन्द, धन पा सकता है। हिंदू धर्म में माँ गायत्री को पंचमुखी माना गया है जिसका अर्थ है यह संपूर्ण ब्रह्माण्ड जल, वायु, पृथ्वी, तेज और आकाश के पाँच तत्वों से बना है। संसार में जितने भी प्राणी हैं, उनका शरीर भी इन्हीं पाँच तत्वों से बना है। इस पृथ्वी पर प्रत्येक जीव के भीतर गायत्री प्राण-शक्ति के रूप में विद्यमान है। यही कारण है कि गायत्री को सभी शक्तियों का आधार माना गया है। इसीलिए भारतीय संस्कृति में आस्था रखने वाले हर प्राणी को प्रतिदिन गायत्री उपासना अवश्य करनी चाहिए।

गायत्री मंत्र की महिमा महान है। आत्मसाक्षात्कार के जिज्ञासुओं के लिए यह मंत्र ईश्वर का वरदान है। केवल गायत्री मंत्र ही, बिना समर्थ गुरु के सतत सान्निध्य के आत्मसाक्षात्कार कराने में समर्थ है। इस मंत्र के मानसिक जप के लिए कोई बंधन नहीं होता। मानसिक जप कहीं भी किसी भी स्थिति में किया जा सकता है। गीता, गंगा और गायत्री प्रभु की तीन विलक्षण शक्तियाँ हैं जो ममतामयी, परम पवित्र और पतितपावनी हैं। इनसे मनुष्य जाति पाप मुक्त हो, शुद्ध बुद्ध होता है जिससे ईश्वर तत्व का ज्ञान प्राप्त होता है। गायत्री को गुरुमंत्र कहा गया है। माँ गायत्री इतनी ममतामयी हैं की वे अपने भक्तों का ज्यादा देर बिलखते नही देख सकतीं अतः वे शीघ्र ही सुध लेती हैं। वे प्रसन्न होने पर अपने भक्तों और श्रद्धालुओं को चारों पुरुषार्थ – धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का तुरंत ही दान कर देती हैं। माँ गायत्री को कामधेनु की संज्ञा भी दी जाती है। माता गायत्री की महिमा वर्णन करना असंभव है। माँ गायत्री की भक्ति की निष्पत्ति है – 'सर्वे भवन्तु सुखिनः'– सब सुखी हों। हम अच्छा बनने, अच्छा करने और अच्छा दिखने की कामना के साथ यदि माँ की उपासना करते हैं तो निश्चित ही चमत्कार घटित होता है।

धर्मग्रंथों में यह भी लिखा है कि गायत्री उपासना करने वाले की सभी मनोकामनाएँ पूरी होती हैं तथा उसे कभी किसी वस्तु की कमी नहीं होती। गायत्री से आयु, प्राण, प्रजा, पशु, कीर्ति, धन एवं ब्रह्मवर्चस के सात प्रतिफल अथर्ववेद में बताए गए हैं, जो विधिपूर्वक उपासना करने वाले हर साधक को निश्चित ही प्राप्त होते हैं। विधिपूर्वक की गयी उपासना साधक के चारों ओर एक रक्षाकवच का निर्माण करती है व विपत्तियों के समय उसकी रक्षा करती है।

गायत्री माँ, वेदों की माता है, जननी हैं। यह वेद-वेदांग आध्यात्मिक व भौतिक उन्नति, ज्ञान-विज्ञान का अक्षुण्ण भंडार अपने में समेटे हैं। अतः गायत्री की उपासना और भक्ति कल्याण के साधन हैं, इसी से हम उन्नति, सुखमय जीवन-भक्ति व सद्-पथगामी बन सकते हैं। भगवान मनु कहते हैं कि जो पुरुष प्रतिदिन आलस्य त्याग कर तीन वर्ष तक गायत्री का जप करता है, आकाश की तरह व्यापक परब्रह्म को प्राप्त होता है।

माँ गायत्री की साधना और उपासना सच्चे मन से एकाग्र होकर करने वाले साधक को अमृत, पारस, कल्पवृक्ष रूपी लाभ सुनिश्चित रूप से प्राप्त होता है। गायत्री मंत्र को जगत की आत्मा माने गए साक्षात देवता सूर्य की उपासना के लिए सबसे सरल और फलदायी मंत्र माना गया है। यह मंत्र निरोगी जीवन के साथ-साथ यश,

प्रसिद्धि, धन व ऐश्वर्य देने वाली होती है। लेकिन इस मंत्र के साथ कई युक्तियाँ भी जुड़ी हैं। अगर आपको गायत्री मंत्र का अधिक लाभ चाहिए तो इसके लिए गायत्री मंत्र की साधना विधि-विधान और मन, वचन, कर्म की पवित्रता के साथ जरूरी माना गया है।

वेदमाता माँ गायत्री की उपासना २४ देवशक्तियों की भक्ति का फल व कृपा देने वाली भी मानी गई है। इससे सांसारिक जीवन में सुख, सफलता व शांति की चाहत पूरी होती है। खासतौर पर हर सुबह सूर्योदय या ब्रह्ममुहूर्त में गायत्री मंत्र का जप ऐसी ही कामनाओं को पूरा करने में बहुत शुभ व असरदार माना गया है।

गायत्री मंत्र की सहज स्वीकारोक्ति अनेक धर्म-संप्रदायों में है। सनातनी और आर्यसमाजी तो इसे सर्वश्रेष्ठ मानते ही हैं। स्वामीनारायण सम्प्रदाय की मार्गदर्शिका 'शिक्षा पत्री' में भी गायत्री महामंत्र का अनुमोदन किया गया है। संत कबीर ने 'बीजक' में परब्रह्म की व्यक्त शक्तिधारा को गायत्री कहा है। सत्साईं बाबा ने भी कहा है कि गायत्री मंत्र इतना प्रभावशाली हो गया है कि किसी को उसकी अपेक्षा नहीं करनी चाहिए। उन्होंने स्वयं गायत्री मंत्र का उच्चारण करके भक्तों से उसे अपनाने की अपील की है। इस्लाम में गायत्री मंत्र जैसा ही महत्त्व सूरह फातेह को दिया गया है।

गायत्री जयंती पर्व गायत्री महाविद्या के अवतरण का पर्व है। यह शक्ति की उपासना का अवसर है। भगवती गायत्री आद्याशक्ति प्रकृति के पाँच स्वरूपों में एक मानी गयी हैं। इनका विग्रह तपाये हुए स्वर्ण के समान है। वास्तव में भगवती गायत्री नित्यसिद्ध परमेश्वरी हैं। किसी समय ये सविता की पुत्री के रूप में अवतीर्ण हुई थीं, इसलिये इनका नाम सावित्री पड़ गया।

कहते हैं कि सविता के मुख से इनका प्रादुर्भाव हुआ था। भगवान सूर्य ने इन्हें ब्रह्माजी को समर्पित कर दिया। तभी से इनकी ब्रह्माणी संज्ञा हुई।

कहीं-कहीं सावित्री और गायत्री के पृथक-पृथक स्वरूपों का भी वर्णन मिलता है। इन्होंने ही प्राणों का त्राण किया था, इसलिये भी इनका गायत्री नाम प्रसिद्ध हुआ। उपनिषदों में भी गायत्री और सावित्री की अभिन्नता का वर्णन है।

गायत्री ज्ञान-विज्ञान की मूर्ति हैं। इस प्रकार गायत्री, सावित्री और सरस्वती एक ही ब्रह्मशक्ति के नाम हैं। इस संसार में सत-असत जो कुछ हैं, वह सब ब्रह्मस्वरूपा गायत्री ही हैं। भगवान व्यास कहते हैं – जिस प्रकार पुष्पों का सार मधु, दूध का सार घृत और रसों का सार पय है, उसी प्रकार गायत्री मन्त्र समस्त वेदों का सार है। गायत्री वेदों की जननी और पाप-विनाशिनी हैं, गायत्री-मन्त्र से बढ़कर अन्य कोई पवित्र मन्त्र पृथ्वी पर नहीं है। ★ ★ ★

पुण्य स्मृति में

स्व. ताई शेखावाटण (गीता शर्मा)

श्रद्धा सुमन

ना हँसा ना रो सका हूँ मै तेरे जाने के बाद
चैन से ना सो सका हूँ, मैं तेरे जाने के बाद
सब वहाँ मौजूद है, तुमने सँजोया था जहाँ
कुछ तो है जो खो चुका हूँ, मैं तेरे जाने के बाद

– ताऊ शेखावाटी
०९४१४२ ७०३३६

श्रद्धावनत — सकल पुत्र, पौत्र एवं परिवार
३२, जवाहर नगर, सवाई माधोपुर (राज.)

– नसीहत –

ताई कै ही पाण, ताऊ करतो टरड़का
ढीला पड़ग्या ढाण, बा मरताँ हीं बावळा
(अर्थात, पत्नी ही सकल सुखों का सार है,
अतः उसका विशेष ध्यान रखें।)

आखिर ये आडम्बर क्यों ?

– शिव कुमार लोहिया
राष्ट्रीय महामंत्री

मारवाड़ी समाज के विषय में यह प्रसिद्ध है :–

जहाँ न पहुँचे रेलगाड़ी, वहाँ पहुँचे बैलगाड़ी
जहा न पहुँचे बैलगाड़ी, वहाँ पहुँचे मारवाड़ी।

मरूभूमि के ये बासिंदे प्रकृति की मार सहते अपने कूवत से देश के कोने-कोने में फैलकर अपनी पहचान बनाई। व्यापार एवं उद्योग का ऐसा कोई कार्यक्षेत्र नही, जहाँ पर हमारी विशिष्ट छाप न हो। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि समाज की अग्रगति एवं विशिष्टताओं पर देशी-विदेशी लेखकों ने अपनी कलम आजमाई है। मैं मानता हूँ कि व्यापारिक सफलता की पीछे नैतिक एवं सामाजिक मूल्यों पर हमारी आस्था मुख्य कारण रही है। मारवाड़ी कहलाने में गौरव करने वाला व्यक्ति :

१. धर्मभीरु एवं विवेकी होता है।
२. सादा जीवन उच्च विचार के आदर्श का पालन करता है।
३. अपनी कार्यकुशलता से सबका हृदय जीत लेता है।
४. सभी विपरीत परिस्थितियों को अनुकूल बनाने का हर संभव प्रयास करता है।
५. आय एवं व्यय में सदैव संतुलन बनाये रखता है।
६. उचित मुनाफे पर व्यवसाय करता है।
७. वह व्यवहारकुशल एवं ईमानदार होता है।
८. अपनी कमाई से परिवार के पोषण के अतिरिक्त आश्रित, अतिथि, गोमाता, कौवे एवं कुत्ते को भी अंशदान देता है।

जिस प्रकार बंधन में रहकर ही नदी का जल समुद्र में जाकर मिलता है, उसी प्रकार मर्यादा में रहने से ही व्यक्ति एवं समाज प्रगति कर सकता हैं।

आज परिस्थितियाँ बदलती नजर आ रही हैं। ईमानदारी एवं सादा जीवन उच्च विचार के ग्राहक कम होते जा रहे हैं। रातों-रात बिना परिश्रम के करोड़पति बनने की महात्वाकांक्षा के कारण हम मर्यादाओं को भंग कर रहे हैं। परिवार बिखर रहे हैं। झूठी शान-शौकत एवं मान-सम्मान के नाम पर फिजूलखर्ची एवं अहमतुष्टि अपने चरम पर है या अभी चरम बाकी है, कहना मुश्किल है। कर्म में नीति, खर्च में रीति से एवं दान करे प्रीति से वाली बात अब गौण होती जा रही है। इस मानसिकता का प्रदर्शन विवाह के अवसर पर देखने को मिलता है। ऐसे अवसरों पर सेठजी तिजोरी खोल देते हैं। फिजूलखर्ची के एक से एक नये तरीके इस्तमाल किये जाते हैं। इवेंट मैनेजमेंट वालो की बन आती है। कुछ ऐसे मुद्दे है जिन पर हमें तुरंत अपना ध्यान देना होगा।

निमत्रंण पत्र – ऊँची लागत के निमंत्रण पत्र छपवाये जाते हैं, जिनमें विवाह की तारीख एवं स्थान खोजना एक मुश्किल कर्म होता है। इन निमंत्रण पत्रों में भगवान के अनेकों चित्र रहते हैं। न चाहते हुए भी इन्हें रद्दी की टोकरी मे फेंकना पड़ता है। इससे भावनाओं को ठेस लगती है। आज के इस तकनीकी दौर में निमंत्रण वाटसअप, इमेल एवं एस.एम.एस. के द्वारा आराम से भेजा जा सकता है। अपनी नजदीकी रिश्तेदारों को मिठाई भेजी जा रही है, उसे जारी रखनें में कोई दिक्कत की बात नही हैं। वैसे आज पर्यावरण बचाने के लिए कागजों की वचत अत्यावश्यक है।

रात्रिभोज एवं हाई टी – अक्सर देखा जाता है कि भोजन की तैयारी में जो व्यवस्था रहती है उस पर कम-से-कम ध्यान दिया जाता है। पूरा ध्यान इस बात पर रहता है कि कितने व्यंजन रहेंगे एवं कितने काउंटर लगेंगे। जब व्यंजनों की संख्या ७०-८० तक पहुँच जाती है, उनकी तैयारी पर नजर रखना मुश्किल हो जाता है। इस समस्या से निजात पाने के लिए दिन के फेरे का प्रचलन प्रारंभ हुआ था। एक दौर ऐसा भी आया था जब स्वागत में सिर्फ पेय पदार्थ ही दिये जाते थे। रात्रिभोज में भी व्यंजनो की संख्या सीमित होनी चाहिए। इस विषय पर फिर से पहल की आवश्यकता है। आज की पूरी परिस्थिति का सवसे अधिक फायदा कैटरर वर्ग को हो रहा है। मर्यादा में रहने से विवाह के अवसर पर जूठन भी नहीं गिरेगा। हमारी संस्कृति में अन्न का बहुत महत्व है। धरती माता अपनी छाती चीरकर अन्न देती है। इसे पैसे से खरीद सकने की भावना के कारण इसका महत्व नगण्य हो जाता है। विदेश के कुछ देशों में तो जूठन छोड़ने से होटलों मे जुर्माना भरना पड़ता है।

दिखावा-आडंबर – दिखावे का यह आलम है कि थीम पर अनाप-शनाप खर्च होता है। फल-फूल विदेशों से मंगवाये जाते हैं। देश के विभिन्न भागों से रकम-रकम के व्यंजन की व्यवस्था रहती है। घर की बहू-बेटियाँ महिनों से खरीदारी में लग जाती है। प्रत्येक नेग मे दिये जाने वाले सामानों की सजावट पर विशेष ध्यान दिया जाता है। कुछ घंटो की वाहवाही के लिये आवश्यकता से अधिक व्यवस्था वैसे भी फिजूलखर्ची है। विवाह में मद्यपान के बढ़ते प्रचलन पर सम्मेलन वर्षो से समाज के आगाह करता आया है। व्यक्तिगत चर्चाओं में सभी समाजबंधु आज के इन प्रचलित व्यवस्थाओं से सहमत नहीं हैं। जनमानस को देखते हुए मुझे आशा ही नही बल्कि पूर्ण विश्वास है कि इन परिस्थितियों से उबरना मुश्किल हो सकता है, असंभव नहीं है। गौर करने की बात है कि समाज में मध्यम

(शेष पृष्ठ २९ पर)

WONDER GROUP
wonder images
one city. one machine. one colour.
Wonder Images PVT. LTD.
Wonder Images is an ISO 9001 : 2008 certified company with focus on printing for indoor and outdoor advertising across flex, P/E and PVC mediums with printing capacity of 100,000 sq.ft per day.
We have Five state of the art printing machines.(HP UV 2300, HP XLJET 1500, VUTEK 3360, HP LATEX L 65500 & HP Designjet 5500 PS)
Indoor & Outdoor SOLUTIONS
• Front-lit-flex
• Back-lit-flex
• Woven P/E
• Self Adhesive vinyl
• Building wrap
• One way vision
• Vehicle / fleet graphics
• Floor and wall graphics
• Reflective Signage
• Frosted vinyl
• Canvas
• Translite
• Photo realistic poster paper
• Mesh, Tyvek, Yupo
only 1 in eastern India to expertise in printing on woven P/E
Hundreds of colours & media for Indoors
5 State-of -the-art printing machine
Eastern India's Largest Outdoor Printers.
Contact Us:
Amit: 09830425990
Email: amit@wondergroup.in
Works:
Tangra Industrial Estate- II
(Bengal Pottery Compound)
45, Radhanath Chowdhury Road. Kolkata – 700 015
Tel: 033- 2329 8891-92
Fax: 033- 2329 8893

कोशिश होती रहे बेकार, फिर भी करते रहो प्रयास
जीत उसी की होती है, जिसे हार से नहीं है इंकार

— संजय कुमार हरलालका
राष्ट्रीय संगठन मंत्री

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन २९वें अधिवेशन पर कौस्तुभ जयन्ती भी मना रहा है। किसी भी संगठन या संस्था के लिये इससे अधिक प्रसन्नता की बात नहीं हो सकती कि वह ५०, ७५ या शतक वर्ष मनाये। इस प्रसन्नता का कारण यह होता है कि जिन-जिन लोगों ने इतने सालों तक संस्था को अपने श्रम से सींचा, इस मौके पर या तो उनका आशीर्वाद मिल जाता है या उनका स्मरण हो जाता है, साथ ही आने वाली पीढ़ी को एक नई प्रेरणा, कार्य करने का साहस व मार्गदर्शन मिलता है।

यूँ तो अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के १४ प्रान्तों में से एक है बिहार। किन्तु इन १४ में बिहार को सर्वोपरि प्रान्त की श्रेणी में रखा जाये तो शायद अतिशयोक्ति नहीं होगी। सदस्यता की दृष्टि से हो या कार्यकलापों की दृष्टि से, बिहार हमेशा अग्रणी रहा है। सम्मेलन के समाज सुधार के मुद्दों पर भी प्रादेशिक सम्मेलन समय-समय पर अपनी भूमिका का निर्वाह करता रहा है। बावजूद इसके आज भी समाज में व्याप्त कुरीतियाँ और नित नई पनप रहीं समस्याएँ हम सबके लिये चिन्तनीय विषय हैं।

एक समय था जब समाज सुधार की बात करते ही समाज का एक ऐसा तबका बिदक जाता था, जिन्से इन बातों से गुरेज था। किन्तु आज इस बात पर खुशी होती है कि वही तबका न सिर्फ सम्मेलन से जुड़ा है बल्कि समाज सुधार के मुद्दों पर चिन्तनशील भी है। कहीं न कहीं यह सम्मेलन के सहनशील परिणामों का ही प्रयास है कि वह उन तक अपनी बात पहुँचा पाने में सफल हो पाया। बावजूद इसके आज समाज में समस्याएँ और ज्यादा बढ़ गई हैं। जिस तरह देश की आबादी बढ़ रही है, उसी तरह सामाजिक समस्याएँ भी सुरसा के मुँह की भांति बढ़ती जा रही हैं। इन्हें रोकने तथा लोगों तक अपनी बात पहुँचाने का कार्य तो हम सब कर रहे हैं, लेकिन अपेक्षित परिणाम अभी हमें मिल नहीं मिल पाया है। बावजूद इसके हमें निराश नहीं होना चाहिए। कहते हैं कि **अगर सपने सच न हों तो रास्ता बदलना चाहिए, सिद्धांत नहीं, पेड़ हमेशा पत्तियाँ बदलते हैं, जड़ नहीं।**

ठीक इसी तरह हमें भी समाज सुधार से सम्बन्धित बात लोगों तक न सिर्फ पहुँचाने, बल्कि उन्हें इसके लिये राजी करने के लिये कुछ अन्य रास्ते तलाश करने पड़ेंगे। समाज सुधार से जुड़े जितने भी मुद्दे हैं, इन सबका समाधान है – संस्कार व सहनशीलता। संस्कारों का पतन होने से ही तलाक, विवाह समारोहों में मद्यपान, टूटते परिवार, बुजुर्गों की उपेक्षा, दिखावा, आडम्बर जैसी समस्याएँ व अनेक अवगुण हमारे जीवन में घर कर जाते हैं। इसके लिये राष्ट्र एवं प्रान्त स्तर पर जोरदार प्रयास करना होगा। भले ही इस कार्य में देर लगे, किन्तु सफलता अवश्यंभावी है। जिस तरह कहते हैं कि **भगवान के घर में देर है, अंधेर नहीं।** हमें अपने भीतर इस जज्बे को लाना होगा कि मंजिल तक पहुँचने के लिये हम कांटों का ताज भी पहन सकते हैं।

मंजिल यूं ही नहीं मिलती राही को,
जुनून सा दिल में जगाना पड़ता है,
पूछा चिड़िया को कि घोसला कैसे बनता है,
वो बोली, तिनका-तिनका उठाना पड़ता है।

सम्मेलन का स्वरूप व कार्यशैली अन्य संस्थाओं से काफी भिन्न है। तभी तो अखिल भारतीय स्तर पर सम्मेलन गत आठ दशकों से अपने विभिन्न प्रान्तों के माध्यम से समाज सुधार की अलख जगाये हुए है। नाना झंझावतों को सम्मेलन ने न सिर्फ देखा है बल्कि उससे मुकाबला किया है। अंततः अनेक मामलों में सफलता भी पाई है।

मारवाड़ी की एक खासियत होती है कि वह जीवन में जल्दी हार नहीं मानता। व्यापार में उसे अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है, बावजूद इसके वह लड़ता रहता है और एक दिन अपनी मंजिल पा ही लेता है। कमोबेश यही स्थिति है हमारे सामाजिक ताने-बाने की। जैसे-जैसे लोगों के पास धन का प्रवाह अधिक होता गया है, वे निरंकुश हो गये हैं। कुरीतियाँ उनमें ज्यादा घर कर गई हैं। हमें इन कुरीतियों से लड़ना है। उन्हें समझाना होगा कि वे इन कुरीतियों का पालन करके क्षणिक आत्मिक शांति या वाह-वाही भले ही पा रहे हों, किन्तु अंततोगत्वा इसका परिणाम दुःखद है। जिस तरह हम अपने बच्चों को, उनके भविष्य को देखते हुए शिक्षित बनाते हैं, धन का संचय करते हैं कि उनके काम आयेगा। जीवन बीमा पॉलिसी करवाते हैं ताकि अकस्मात्

कोई घटना-दुर्घटना घटने पर परिवार पर कोई आंच नहीं आये, उसी तर्ज पर यह समझाना होगा कि आज हम जो कर रहे हैं, भले ही उसका खामियाजा हम न भी भोगें तो भी आने वाली नस्ल इसमें पिस जायेगी। हमें इसके लिये इतना अधिक प्रयास करना होगा कि समाज के लोग भी सोचने के लिये बाध्य हो जायें कि आखिर क्यों? क्यों कर रहे हैं हम ऐसा? हमें समाज सुधार के मामले में सफलता की मंजिल को पाना ही होगा। कहते हैं – ***एक सफल व्यक्ति वो है जो औरों द्वारा अपने उपर फेंके गये ईटों से एक मजबूत नींव बना सके।***

बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के कौस्तुभ जयन्ती पर सभी पूर्व, वर्तमान व पदनिष्ठ होने वाले पदाधिकारियों तथा सदस्यों से यह अपेक्षा है कि वे इस मौके पर समाज सुधार से सम्बन्धित ऐसा कोई संकल्प लें, जिसकी गूंज व क्षमता पूरे अखिल भारतीय स्तर तक दिखे। एक बार सबको मिलकर हिम्मत, लगन व सच्ची मानसिकता के साथ कोशिश करने भर की देर है, फिर ऐसा कोई कारण नहीं दिखता कि हम असफल हो जायें।

कोशिश होती रहे बेकार, फिर भी करते रहो प्रयास
जीत उसी की होती है, जिसे हार से नहीं है इंकार।

मारवाड़ी समाज – "नैतिक अवमूल्यन"

एक समय था जब मारवाड़ी समाज को एक आदर की दृष्टि से देखा जाता था कारण कि उनमें समाज के कार्यों में अभिरूचि, सहिष्णुता एवं गरीब व आर्थिक रूप से कमजोर एवं असहाय तबके के लोगों की सहायता करने की परम्परा थी। हमारे पूर्वज ने स्कूल, कालेज, अस्पताल, धर्मशाला, मंदिरो का निर्माण कराने के साथ-साथ अन्य सामाजिक कार्यो एवं परोपकार में भी पूर्णतः तत्पर थे ताकि समाज में रहने वाला प्रत्येक परिवार विकसित हो। उनके द्वारा किये गये परोपकारी कार्यों के कारण ही आज हमें समाज में एक विशिष्ट पहचान मिली हुई है। पाँच हजार साल पहले करूणा एवं दया की मूर्ति महाराजा अग्रसेन जी ने अपने राज्य अग्रोहा में आये हुए व्यक्ति को एक रुपया तथा एक ईंट प्रदान कर एक सूत्र में बाँधने का प्रयास किया था तथा समाजवाद की स्थापना की जो आज भी याद किया जाता है और उनकी याद में हम सभी प्रति वर्ष उनकी जयन्ती मनाते हैं। परन्तु यह एक यादगार सी रह गई है, सहयोग की भावना, प्यार-मोहब्बत विलुप्त हो गई है। हमें भी उनके द्वारा बताये गये सिद्धान्तो को अपनाकर अपने जीवन में अनुकरण करना चाहिए जिससे स्थिति बदल सकती है और सोने की तरह निखार आ सकता है। परन्तु बड़े दुर्भाग्य की बात है उद्योग/वाणिज्य के साथ वकालत, डाक्टरी, क्रिकेट, आइ. टी. आई एवं प्रशासनिक सेवाओं तथा अन्य क्षेत्रो में महत्वपूर्ण योगदान देते हुए भी विभिन्न कारणो से समाज की छवि दिन प्रतिदिन गिरती जा रही है। आपसी विलीन होता जा रहा है और पैसो की प्यास बढ़ती जा रही है जिसका मुख्य कारण बुजुर्गों से मिली हुई सीख और नैतिक सिद्धांतो को परे कर देना है। संस्थाओ में पदों पर बैठे हुए कुछ नेतागण अपनी नेतागिरी को चमकाने एवं अपनें स्वार्थ की पूर्ति के लिए जघन्य से जघन्य अपराध करने मे भी पीछे नहीं हिचकते, जिसके कई एक उदाहरण सामने आये हैं। यह सब भूल जाते है कि इसका पुष्परिणाम क्या होगा। सामाजिक संस्थाओं मे ऐसे व्यक्तियो को आने की आवश्यकता है जिनमें सेवा करने की आंतरिक आकांक्षा हो एवं जो पूर्णत समर्पित भाव से उत्साहपूर्वक, स्वार्थरहित हो समाज की सेवा कर सकें, जिससे संगठन मजबूत हो सके। आधुनिक परिपेक्ष्य में संस्थाओं के संविधान एवं उनके विस्तृत कार्यकलापो में बदलाव लाने की भी सख्त जरूरत है। बड़े चिन्ता का विषय है, सभी के लिए आत्म-चिंतन का वक्त है। हमें समाज में फैली हुई बुराईयों एवं गिरते हुए सामाजिक एवं नैतिक स्तर पर ध्यान देना होगा। एक सामाजिक परिवर्तन लाने की जरूरत है अन्यथा इस समाज की अप्रतिष्ठा बढ़ती जायेगी। आज सभी मनीषियों, समाजसेवकों एवं सम्मेलन से जुड़े सभी पदाधिकारियों को एकजुट होकर चिन्तन करने की आवश्यक्ता है। समाज में बढ़ती हुई हिंसा, अश्लीलता, दहेज जैसी समस्याओं के कारण नैतिक एवं सामाजिक मूल्यो मे गिरावट आ रही है। हमारे संबंधो मे सामंजस्य नहीं रहा जिसके कारण हम आंतरिक एवं बाह्य संघर्षो से सदा जूझते रहते हैं। आज युवा पीढ़ी के साथ मिलकर निदान ढूँढने की जरूरत है तथा समाज व देश के प्रति अपनी स्वार्थपरता को दरकिनार कर अपने कर्त्तव्यों को निभाना चाहिए जिससे समाज की एक अलग पहचान होगी, एक अनमोल धरोहर बच जायेगी तथा युग-युगान्तर तक विश्व में जो हमारी विशिष्ट पहचान एवं ख्याति बनी हुई है वह बरकरार रहेगी।

– आर. एस. अग्रवाल
पटना (बिहार)

रामनिवास आशारानी लाखोटिया राजस्थानी व्यक्तित्व सम्मान

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं दिल्ली की समाजसेवी संस्था 'रामनिवास आशारानी लाखोटिया ट्रस्ट' के संयुक्त तत्वाधान में राजस्थानी मूल के एक व्यक्ति को समाज के प्रति विशिष्ट योगदान हेतु सम्मानित करने के लिए इस सम्मान की स्थापना की गयी है। यह सम्मान सम्मेलन के ८१वें स्थापना दिवस समारोह (२५ दिसम्बर २०१५) / २४वें राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर प्रदान किया जाएगा। इसके अन्तर्गत मानपत्र एवं १,००,००० रुपये की सम्मान-राशि के अतिरिक्त समारोह स्थल तक पधारने एवं लौटने हेतु मार्गव्यय एवं निवास आदि की व्यवस्था भी दी जाती है।

प्रादेशिक सम्मेलनों, शाखा सभाओं एवं सदस्यों से सादर अनुरोध है कि सम्मान के लिए नाम प्रस्तावित कर केन्द्रीय कार्यालय को १५ सितम्बर २०१५ तक भेजने की कृपा करें।

निर्णायक मंडल

अध्यक्ष : श्री सीताराम शर्मा; सदस्यगण : श्री रामअवतार पोद्दार, श्री विश्वम्भर दयाल सुरेका, श्री प्रह्लाद राय अगरवाला, श्री नंदलाल रूँगटा, श्री एन. जी. खेतान, श्री बलदेव दास मूंधड़ा, श्री राज पुरोहित, श्री सत्यप्रिय लाखोटिया, श्री नरेन्द्र कुमार तुलस्यान, श्री हरिप्रसाद बुधिया, डॉ. जुगल किशोर सराफ, श्री जुगल किशोर जैथलिया, श्री सज्जन भजनका, श्री विवेक गुप्ता, श्री दिलीप गांधी, श्री काली चरण सराफ एवं श्री शिव कुमार लोहिया।

समाचार-सार

ये है रणवीर सिंह के 'आराम का मामला'!

उदीयमान बालीवुड अभिनेता रणवीर सिंह पर फिल्माये गए रूपा फ्रन्टलाईन के विज्ञापन को जबर्दस्त प्रतिक्रिया मिली है। रूपा ने यह बोल्ड विज्ञापन मई २०१५ में शुरू किया था और काफी कम समय में ही इस विज्ञापन ने बहुत अच्छी लोकप्रियता हासिल की है।

श्री मुकेश अग्रवाल

"हमारे विज्ञापन पर मिली इस प्रतिक्रिया से हम बहुत खुश हैं क्योंकि अंदरूनी और अनौपचारिक वस्त्रों की श्रेणी में कभी किसी विज्ञापन को दर्शकों से ऐसा उत्साहजनक जवाब नहीं मिला है। यह हमें अपने उपभोक्ताओं की जरूरतों के प्रति और अधिक उत्तरदायी बनाता है क्योंकि उन्हीं के प्यार एवं सहयोग से यह सम्भव हुआ है।" रूपा एन्ड कं. के डायरेक्टर **श्री मुकेश अग्रवाल** ने कहा।

२०१४ में इ.टी. बेस्ट ब्रान्ड्स द्वारा 'सबसे अच्छे ब्रान्ड्स में एक' चुनी गयी रूपा देश में इनरवियर श्रेणी के वस्त्र-उत्पादकों की पहली कतार में है और बाजार में इसकी बहुत अच्छी हिस्सेदारी है।

सीताराम रूँगटा राजस्थानी भाषा साहित्य सम्मान

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व उपाध्यक्ष एवं बिहार प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष स्व. सीताराम रूँगटा की स्मृति में राजस्थानी भाषा की श्रीवृद्धि एवं प्रोत्साहन हेतु राजस्थानी साहित्यकारों को देने के लिए इस सम्मान की स्थापना की गई है। यह सम्मान सम्मेलन के ८१वें स्थापना दिवस समारोह (२५ दिसम्बर २०१५)/ २४वें राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर प्रदान किया जायेगा। इसके अन्तर्गत मानपत्र एवं २१,००० रुपये की सम्मान-राशि के अतिरिक्त समारोह स्थल तक पधारने एवं लौटने हेतु मार्गव्यय एवं निवास आदि की व्यवस्था भी दी जाती है।

प्रादेशिक सम्मेलनों, शाखा सभाओं एवं सदस्यों से सादर अनुरोध है कि सम्मान के लिए नाम प्रस्तावित कर केन्द्रीय कार्यालय को १५ सितम्बर २०१५ तक भेजने की कृपा करें।

निर्णायक मंडल

अध्यक्ष : डॉ. हरिप्रसाद कानोडिया; सदस्यगण : श्री रामअवतार पोद्दार, श्री सीताराम शर्मा, श्री रतन शाह, श्री नथमल केड़िया, श्री जुगल किशोर जैथलिया, श्री श्याम सुन्दर बगड़िया, श्री राजीव हर्ष, सुश्री इन्दू जोशी, श्री श्याम सुंदर आचार्य, श्री रामनिवास लाखोटिया एवं श्री शिव कुमार लोहिया।

समाचार-सार

विनोद पोद्दार बने झारखण्ड के नये एडवोकेट जनरल

श्री विनोद कुमार पोद्दार

वरिष्ठ अधिवक्ता एवं समाजसेवी श्री विनोद कुमार पोद्दार को झारखण्ड सरकार द्वारा २१ मई २०१५ को राज्य का एडवोकेट जनरल मनोनीत किया गया। इसके पूर्व भी श्री पोद्दार को २००१ में प्रांत का प्रथम एडिशनल एडवोकेट जनरल मनोनीत किया गया था। आप एक सक्रिय समाजसेवी भी हैं और कई प्रतिष्ठित संस्थाओं से जुड़े हैं।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की बधाई!

राँची के अपूर्व तुलस्यान सी.ए. परीक्षा में आये राज्य में प्रथम

श्री अपूर्व तुलस्यान

कांके रोड, राँची (झारखण्ड), निवासी श्रीमती पुष्पा एवं श्री अशोक तुलस्यान के सुपुत्र श्री अपूर्व तुलस्यान ने सी.ए. की फाइनल परीक्षा में झारखण्ड राज्य में प्रथम एवं देश में पाँचवा स्थान प्राप्त किया है।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी अपूर्व बाल्यकाल से ही अत्यन्त मेधावी हैं एवं अपनी शैक्षणिक यात्रा में हमेशा उत्कृष्ट प्रदर्शन करते रहे हैं।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की बधाई एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनायें!

केदारनाथ भागीरथी देवी कानोड़िया राजस्थानी भाषा बाल-साहित्य सम्मान

सुप्रसिद्ध उद्योगपति एवं समाजसेवी स्व. केदारनाथ कानोड़िया एवं उनकी धर्मपत्नी स्व. भागीरथी देवी की स्मृति में राजस्थानी भाषा बाल-साहित्य की श्रीवृद्धि एवं प्रोत्साहन हेतु इस सम्मान की स्थापना की गयी है। यह सम्मान सम्मेलन के ८१वें स्थापना दिवस समारोह (२५ दिसम्बर २०१५) / २४वें राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर प्रदान किया जायेगा। इसके अन्तर्गत मानपत्र एवं २१,००० रुपये की सम्मान-राशि के अतिरिक्त समारोह स्थल तक पधारने एवं लौटने हेतु मार्गव्यय एवं निवास आदि की व्यवस्था भी दी जाती है।

प्रादेशिक सम्मेलनों, शाखा सभाओं एवं सदस्यों से सादर अनुरोध है कि सम्मान के लिए नाम प्रस्तावित कर केन्द्रीय कार्यालय को १५ सितम्बर २०१५ तक भेजने की कृपा करें।

निर्णायक मंडल

अध्यक्ष : श्री नंदलाल रूँगटा; सदस्यगण : श्री रामअवतार पोद्दार, श्री रतन शाह, श्री जुगल किशोर जैथलिया, श्री संतोष सराफ, श्री काशी प्रसाद खेरिया, श्री रतन शाह, श्री मुकुन्द राठी, श्री प्रह्लाद राय गोयनका, श्री रामनाथ झुनझुनवाला एवं श्री शिव कुमार लोहिया।

कविता

तुम्हें! निर्माण करना है।

धरती की पुत्री! उठो
अब नहीं चलेगा काम
धरती में समाने से,
रोने - पीटने, आंसू बहाने से
हकीकत से पलायन करने से।

तुम्हे सामना करना है,
लड़ना है, संघर्ष करना है,
सड़ी गली रूढ़िग्रस्त,
अमानवीय परम्पराओं से
शोषण से भेदभाव से।

तुम्हें करना है,
निर्माण, उस समाज का
अन्याय, भेदभाव, शोषण
मुक्त समाज का।

अब घड़ी आ गई है
तुम्हें निर्णय लेना है
पढ़ने का, आगे बढ़ने का,
दृढ़ इच्छाशक्ति से,
संकल्प लेना है, जीना है
सशक्त बन कर
सबल बन कर।

ध्वस्त करनी है,
दीवारें भेद भाव की,
पाटनी है दरारें शोषण की,
तोड़ने हैं दायरे दहेज के
स्थापना करनी है
समता की, सामाजिक न्याय की।

ना तुम देवी हो, ना दासी
तुम शक्ति हो, तुम्ही मानवी हो
तुम धरती से दृढ़ प्रबल,
तुम साक्षात अग्नि हो
तुम सूर्य हो तुम्ही हो चन्द्र
तुम्हीं जल, वायु अगन हो।

तुम्हे देवी बनकर
मन्दिर की कारा में
कैद नहीं रहना है
तुम्हें दुर्वल दासी बनकर
रोना–बिसूरना भी नहीं है।

तुम्हे सशक्त बन कर
संघर्ष करना है
कुरीतियों से लड़ना है
नवीन चुनौतियां स्वीकारना है।

तुम्हें! सबल बन कर
नव समाज का, निर्माण करना है
भेदभाव, शोषण मुक्त
समता, सामाजिक न्याय व
समानता की नींव पर।

तुम्हें! जीना है
एक आत्म गौरव युक्त, आत्मनिर्भर
सशक्त शक्ति की तरह।
अतः उठो, जागो, आगे बढ़ो,
अपनी राह खुद बनाओ।

– प्रो. डॉ. तारालक्ष्मण गहलोत
जोधपुर (राज)

भंवरमल सिंघी समाज सेवा सम्मान

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष एवं समाजसेवी स्वर्गीय भंवरमल सिंघी की स्मृति में गठित भंवरमल सिंघी समाज सेवा न्यास द्वारा समाज सुधार के क्षेत्र में विशेष योगदान के लिए स्थापित भंवरमल सिंघी समाज सेवा सम्मान सम्मेलन के ८१वें स्थापना दिवस (२५ दिसम्बर २०१५) / २४वें राष्ट्रीय अधिवेशन के अवसर पर प्रदान किया जाएगा। इसके अन्तर्गत मानपत्र एवं ११,००० रुपये की सम्मान-राशि के अतिरिक्त समारोह स्थल तक पधारने एवं लौटने हेतु मार्गव्यय एवं निवास आदि की व्यवस्था भी दी जाती है।

उक्त सम्मान हेतु प्रादेशिक सम्मेलनों, शाखा सभाओं एवं सदस्यों से २०१३-२०१५ कार्यकाल में समाज सेवा कार्य के आधार पर उपयुक्त व्यक्ति/संस्था का नाम प्रस्तावित कर केन्द्रीय कार्यालय को १५ सितम्बर २०१५ तक भेजने का सादर अनुरोध है।

निर्णायक मंडल

अध्यक्षः श्री सीताराम शर्मा; सदस्यगणः श्री रामअवतार पोद्दार, श्री प्रह्लाद राय अगरवाला, श्री हरिप्रसाद बुधिया, श्री नन्दलाल रूँगटा, डॉ. हरिप्रसाद कानोड़िया, श्री सज्जन भजनका, श्री आत्माराम सोन्थालिया, श्री पुष्कर लाल केडिया एवं श्री शिव कुमार लोहिया।

आपां मारवाड़ी

आपां कागद रा फूल कोनी, गुलाबां री झाड़ी हां,
बालु री भींतां कोनी, आम्मेर री प्हाड़ी हां,
बै ओर होसी जिका ढह जावै थपेड़ा सैं,
आपां तो चट्टान हां क्यूंकि आपां मारवाड़ी हां।

रास्ता भल्यां थक जावै, मारवाड़ी थाके कोनी,
सोनै रा मिरग देख मारवाड़ी हाकै कोनी,
बरसणै री दरकार होवै तो बरस पड़ै जोरां सै,
थोथै बादलां ज्यूं बिना मतलब गाजै कोनी।

मांटी नैं सोनो बणाणै रो हुनर है हाथां मांय,
खारै नैं मीठो बणानै रो कौशल है बातां मांय,
सरकार चाहे जैंरी हो, बजट चाहे जिको बणोवे,
देश री पूंजी री कूंजी है मारवाड़ी रै हाथां मांय।

— **जगदीश प्रसाद पाटोदिया 'चाँद'**, हवड़ा (प. बंग)

कुंडलियो

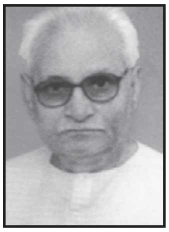

कादो रोज उछाळियो और काढियो खार,
तेरी-मेरी में फंस्या, पक्ष-विपक्षी यार।
पक्ष-विपक्षी यार, प्यार खरसी में बड़गो
तू दारी मैं भांड, खेत में गोदो बड़गो।
चगदूँ घालै जोर, कठै सेवा रो माद्दो?
चोखो बैठ्यो जोड़, भायला फींकै कादो!

– **केसरीकान्त शर्मा 'केसरी'**
मण्डावा (राजस्थान)

कला केवल यथार्थ की नकल का नाम नहीं है। कला दिखती तो यथार्थ है, पर यथार्थ होती नहीं है। उसकी खूबी यही है कि यथार्थ मालूम हो।

– मुंशी प्रेमचन्द

नाक

मित्र हमारे एक हैं, शर्मा सीताराम
करते हैं एक पत्र हित, संपादक का काम
संपादक का काम, एक दिन चिट्‌ठी आई
बोले ताऊ! तब जाने तुम्हरी कविताई
लिखकर कविता एक, नाक पर झट भिजवावो
हम बोले ये लो जी! हाजिर है ले जाओ

ताऊ हरदम राखिए, जग में ऊंची नाक
जब तक उंची नाक है, बनी रहेगी धाक
बनी रहेगी धाक, धाक गर तनिक घट गई
लोग कहेंगे बेचारे की नाक कट गई
कटने ना दो नाक, बात ये शर्मनाक है
खतरनाक तो है ही, संग-संग दर्दनाक है

रामायण में भी मिली, झगड़े की जड़ नाक
जब लक्ष्मण ने काटली, सुर्पनखा की नाक
सुर्पनखा की नाक, तो रावण क्रुद्ध हो गया
इसीलिए तो राम औ रावण युद्ध हो गया
है इतिहास गवाह, अरे भैया! सुण चारण!
सदा रही ये नाक सकल झगड़ों का कारण

नाक न छेड़ो नाक की, नाजुक बड़ा मिजाज
नाक ठंड जो खा गई, बिगड़ेंगे सब काज
बिगड़ेंगे सब काज, हिलाके ये धर देगी
मार-मार के छींक, नाक में दम कर देगी
कह ताऊ कविराज, नाक पर जब अड़ जाती
अच्छे-अच्छों की हालत पतली पड़ जाती

बिना नाक नारी बता, सुन्दर लगती खाक?
नथली का क्या मोल था, जो न होती नाक
जो न होती नाक, बड़ी मुश्किल हो जाती
नानीजी अपने चश्मे को कहां लगाती?
बिना नाक के नारी ना नखराली होती
नासपिटि, नकटी, नकचढ़ी न गाळी होती

ग्यान गंध का जीव को, करवाती है नाक
घ्राण इन्द्रीय इसलिए, कहलाती है नाक
कहलाती है नाक, मनुज के नाक न होती
फुलों में खुशबू गुलाब की धाक न होती
कौन पूछता इत्र केवड़ा खस अरु हीना
धंधा तेल-फुलेल, जगत में चलता ही ना

जाने कितने नाक बिन, लफड़े होते और
खोजी कुत्ता पुलिस का, पकड़ न पाता चोर
पकड़ न पाता चोर, बड़ी मुश्किल हो जाती
पुलिस महकमे की तो नाक नहीं बच पाती
कह ताऊ कविराज, ध्यान से सुन ओय काके!
रखिए अपनी नाक सुरक्षित सदा बचाके

– ताऊ शेखावाटी, सवाई माधोपुर (राज.)

(पृष्ठ २१ का शेष)

आखिर ये आडम्बर क्यों?

एवं निम्न मध्यम वर्ग के लोगों की बहुतायत है। मुट्‌ठी भर लोगों की देखादेखी समाज का मध्यम वर्ग इस चक्रव्यूह मे फँसा अपने को असहाय पाता है। मारवाड़ी समाज जिन विशेषताओं के कारण जाना जाता है, ठीक उसके विपरीत सोच का परियायक हैं हमारी वर्तमान समस्यायें। इस प्रकार के सोच से हासिल कुछ भी नहीं हो सकता, बल्कि दूसरों की नजरों में समाज की छवि धूमिल होती है एवं समाज भी रोगग्रस्त रहता है। विवाह जैसे मांगलिक अवसरों पर अपव्यय रोक कर अपने पूर्वजों की एक प्रथा को पुनर्प्रारम्भ करने की आवश्यकता है, जिसके तहत ऐसे अवसरों पर विशुद्ध दान-धर्म करने की व्यवस्था थी। दानधर्म से मिले शुभाशीष एवं शुभकामनाओं के उन शुभ अवसरों पर प्रत्यक्ष मांगलिक परिणाम होते हैं। यह निस्संदेह है। आज के इस प्रदूषण के दौर में समाज के पुरातन अच्छाईयों, जो कि हमारे समाज की रीढ़ की हड्‌डी हैं, के बारे में युवाओं को अवगत कराने की आवश्यकता है।

सम्मेलन सदैव से ही विवाह आदि अवसरों पर आडम्बर का विरोधी रहा है। उपलब्ध दस्तावेजों के अनुसार सन् १९७४ में इसके विरुद्ध वीड़ा उठाया गया था। सन् १९७६ में एक विज्ञप्ति द्वारा विवाह के अवसर पर पालन करने के लिये कुछ नियमों का प्रतिपादन किया था। उस विज्ञप्ति में यह कहा गया था, "अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन विवाहों के अवसर पर प्रचलित आज की आडम्बरपूर्ण रीति-नीति को व्यक्ति, समाज तथा देश के लिए घातक मानता है।" नवम्बर २००६ में सम्मेलन ने इस विषय पर एक चिन्तन शिविर का आयोजन किया। मुक्त चिन्तन के उपरांत समाज के लिए वैवाहिक आचार संहिता की घोषणा की गई।

सभी समाजबंधुओं एवं संस्थाओं से मेरा नम्र निवेदन है कि इस विषय पर अपने सुझाव से हमें अवगत करायें ताकि मिलजुलकर हम इस परिस्थिति से उबर सकें। ★★★

Comprehensive and Exclusive

Business Economics

... Truly reflecting global aspirations!

Subscribe

100% Bargain

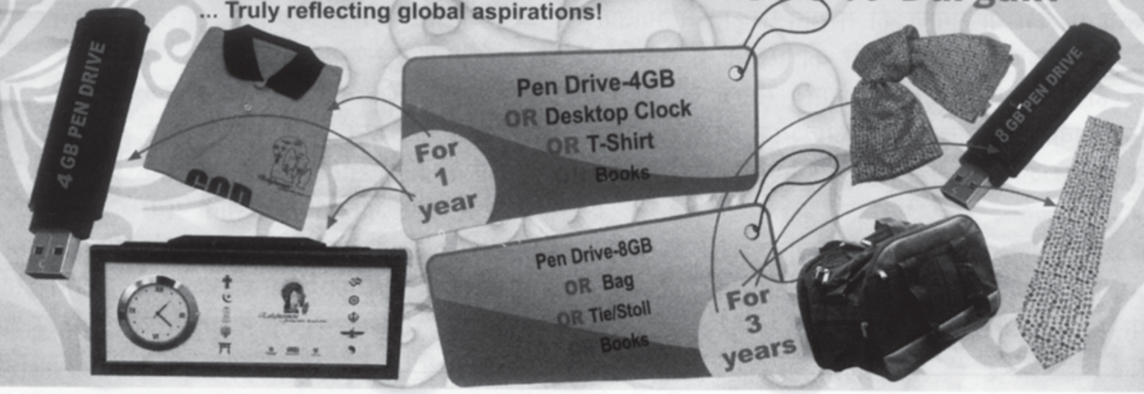

Subscribe Business Economics :

Subscribers may send choice of books valued equal to subscription

Tick	Term	No. of Issues	Price you pay	Gift Value	Saving	US $	UK £	Gift Option
☐	3 Years	72	1440/-	1440/-	1440/-	216	144	☐ 8GB Pen Drive OR ☐ Bag OR ☐ Tie/Stoll OR ☐ Books
☐	1 Year	24	480/-	480/-	480/-	72	48	☐ 4GB Pen Drive OR ☐ Desktop Clock OR ☐ T-Shirt OR ☐ Books
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150)	240/-	150/-	390/-	-	-	☐ Exclusively for Students/Institutions
☐	1 Year	24 + Anniversary Issue (Worth ₹ 150)	240/-	150/-	390/-	-	-	☐ EXCLUSIVELY FOR SENIOR CITIZENS

For 1 year Book of choice upto ₹ 480 | For 3 years Books of choice upto ₹ 1440

Business Economics Subscription Form

Name : Mr./Ms. ______

Address : ______

______ City/District : ______

State : ______ Country : ______ Pin Code : ______

E-mail : ______ Mobile : ______ Landline : ______ (STD CODE)

REMITTANCE DETAILS :

Enclosed Cheque / DD No. ______ dated: ______ for Rs. ______ drawn on: ______

In favour of **CONTEMPORARY NEWS PRIVATE LIMITED**

Signature: ______ date: ______

Mail this subscription form along with your Cheque / DD to : Pramod Kr. Singh, General Manager, **Business Economics**, 3, Middle Road, Hastings, Kolkata - 700 022, India

Ph : 033 - 2223 0335/0368, Mobile : 93395 19642, E-mail : subscriptions@businesseconomics.in

For Subscription enquiries contact : Kolkata : Shaonli Majumder : 033 2223-0368 • **Mumbai :** Rajendra Singh : 90290 84951

New Delhi : Lala P. Yadav : 98102 10095 • **Kohima :** Povotso Lohe : 94360 05889

Lucky DRAW

QUARTERLY LUCKY DRAW FOR THE SUBSCRIBERS :

1st Prize : INR 2000/- • 2nd Prize : INR 1000/- • 3rd Prize : INR 500/-

Shaping

a greener tomorrow

Accountability to the future generation

S. R. RUNGTA GROUP

Cares for the land and its people

MINING, STEEL & POWER

Rungta House, Chaibasa, Jharkhand - 833201

REGISTERED Postal Registration
No. KOLRMS/93/2013-2015
Date of Publication - 17th July 2015
RNI Regd. No. 2868/68

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
(2nd Floor) Kolkata - 700 007
Telefax : (033) 2268 0319
E-mail : aimf1935@gmail.com